कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/–
त्रि वार्षिक : 250/–

संपर्क

lnL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

भारतीय जनता पार्टी श्रीलंका की नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की हत्या की घोर निंदा करती है। यह देखकर भारी दुख होता है कि तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र मछली पकड़ने के समय श्रीलंका की नौसेना की गोलियों से पांच सौ से अधिक मछुआरों को जान से हाथ धोना पड़ा।

रैली

भाजपा अध्यक्ष का चेन्नई प्रवास........ 6
नवजागरण यात्रा : कोलकाता (प. बंगाल)........ 26
कोजीकोड़ (केरल)........ 27
पटना (बिहार)........ 29
कानपुर (उत्तर प्रदेश)........ 29

मोर्चा / प्रकोष्ठ

भाजपा आर्थिक प्रकोष्ठ........ 13
भाजपा महिला मोर्चा प्रशिक्षण – झिंझौली........ 23
भाजयुमो : राष्ट्रीय एकता यात्रा........ 24
भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा........ 25

लेख

भ्रष्टाचार से कलुषित भारत और सुशासित गुजरात का उदाहरण
&ykyÑ".k vkMok.kh........ 15
क्या उमर अब्दुल्ला सरकार के लिए देशभक्ति का महत्त्व नहीं?
&v#.k tsVyh........ 17
भ्रष्टाचार और महंगाई के मुद्दे पर जन–आंदोलन की जरूरत
&lR;iky........ 19

विशेष रिपोर्ट

काला धन : राष्ट्रीय सम्पदा की लूट
&lqczã.;e LokeSh........ 21

इनका कहना है...

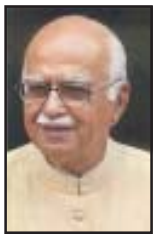

इससे शायद ही कोई इंकार कर सकता है कि हाल ही में समाप्त हुए वर्ष 2010 में यूपीए सरकार ने हमारे देश के नागरिकों को अत्यंत निराशा और ठेस पहुंचाई।

–लालकृष्ण आडवाणी
अध्यक्ष भाजपा संसदीय दल

भाजपा मानती है कि राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाएं, जो सदियों से संसाधनों की कमी के कारण रूकी पड़ी हैं, उन्हें तुरंत शुरू किया जा सकता है बशर्ते कि काला धन वापस देश में आ जाए।

–नितिन गडकरी
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

व्यंग्य चित्र

साभार : नई दुनिया

संपादक के नाम पत्र...

आदरणीय संपादक महोदय,

'कमल संदेश' पाक्षिक पत्रिका का नियमित पाठक हूं। इस पत्रिका से बहुत ही जानकारियां मिलती हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिन्दुस्तान में भ्रष्टाचार चरम पर है। एक के बाद एक घोटाले हो रहे हैं। युवा पीढ़ी पर इसका विपरीत प्रभाव हो रहा है। बेलगाम महंगाई की वजह से आम लोगों के लिए जीना मुश्किल हो गया है। दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं। दलितों को अपना वोट बैंक समझने वाली केन्द्र की सरकार दलित–पिछड़े वर्गों को रोजगार दिलाने में असफल रही है। केन्द्र सरकार को भाजपा की गुजरात सरकार से प्रेरणा लेकर कुछ विकासलक्षी योजनाएं बनानी चाहिए। आज जनता में बेहद आक्रोश है। अब वो दिन दूर नहीं जब भाजपा केन्द्र में सरकार बनाएगी और भ्रष्टाचार के महारोग को नष्ट करेगी।

– बी.एम. परमार
प्रमुख, अपंग मानव विकास मंडल, गुजरात

हमें लिखें..

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

सादर आमंत्रित

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी–66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003
ई-मेल:
kamalsandesh@yahoo.co.in

भ्रष्टाचार में कीर्तिमान बना रहा यूपीए

ओ से तो देश की आजादी के बाद से ही कांग्रेस ने घोटालों को अंजाम देना शुरू कर दिया था लेकिन अभी जिस तरह की लूट–खसोट मची है वैसा दौर देश ने पूर्व में कभी नहीं देखा। मानो यूपीए के मंत्रियों में होड़ लगी है कि कौन सबसे बड़ा घोटालेबाज है। केन्द्रीय मंत्रियों में लोक–लाज नाम की कोई चीज नहीं बची है। वे जनता के खून पसीने की कमाई पर डाका डाल रहे हैं। यह लोकतंत्र के लिए शर्मनाक है।

यूपीए शासन में घोटाले थमने का नाम नहीं ले रहे। राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, आदर्श सोसाइटी घोटाला, 2–जी स्पेक्ट्रम घोटाला जैसे प्रमुख घोटाले के बाद अब एस–बैंड की बिक्री में हुए घोटाले सामने आए हैं। इस घोटाले ने 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले को भी पीछे छोड़ दिया है। 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में जहां 1.76 लाख करोड़ रुपये का चूना देश को लगाया गया वहीं एस–बैंड स्पेक्ट्रम की बिक्री में दो लाख करोड़ रुपये के घोटाले सामने आए हैं। यह अंतरिक्ष मंत्रालय का मामला है और यह मंत्रालय सीधे तौर पर प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के अधीन है। प्रधानमंत्री की भूमिका पर लगातार प्रश्न खड़े हो रहे हैं। राष्ट्रमंडल खेल घोटाले के तार भी प्रधानमंत्री कार्यालय से जुड़े थे। 2जी स्पेक्ट्रम मामले में देशवासियों की आंख में धूल झोंकते हुए डॉ. मनमोहन सिंह हमेशा ए. राजा को बचाते रहे। कपिल सिब्बल निर्लज्ज होकर कहते रहे कि स्पेक्ट्रम आवंटन में घाटा नहीं हुआ। लेकिन सच कुछ और ही था और ए. राजा की गिरफ्तारी हुई।

भ्रष्टाचार को लेकर स्थिति चिंताजनक है। आदर्श सोसाइटी घोटाले में महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज हुई। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने कहा कि विलासराव देशमुख मंत्रिमंडल में रहने लायक नहीं। अजीब विडंबना है कि केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त पीजे थॉमस पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप है और वे भ्रष्टाचार से लड़ने वाली संस्था के प्रमुख पद पर आसीन हैं। सरकार कह रही है कि हमें थॉमस की नियुक्ति के दौरान उनके भ्रष्टाचार के बारे में पता नहीं था। इतने महत्वपूर्ण पद पर जिस व्यक्ति की नियुक्ति हो और उसका अतीत सरकार को पता न हो यह बचकानी बातें हैं और इस तरह का गैरजिम्मेदाराना रवैया देश के लिए घातक है। इस सबके बाद भी थॉमस बेशर्मी की हद को पार कर अपने पद पर बने हुए हैं और बार–बार धमकी दे रहे हैं। क्या इस तरह की स्थिति चिंताजनक नहीं है? क्या किसी सरकार के रहते इस तरह की धमकी की स्थिति बनना लोकतंत्र की सेहत के लिए ठीक है?

भ्रष्टाचार के विरोध में कोई ठोस निर्णय लेने की पहल कांग्रेस अध्यक्षा नहीं कर सकतीं, क्योंकि कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी है। भ्रष्टाचारियों को केवल पदों से हटाना ही काफी नहीं है वरन् उसे सख्त सजा देनी होगी तभी भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकेगा। जिस सरकार के कार्यकाल में इतने घोटाले हो रहे हों, उसके प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को अपने पद पर बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

राजनीति में शुचिता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, प्रतिबद्धता आदि पीछे छूट रहे हैं इसलिए राजनीति से लोगों का विश्वास उठ रहा है। यह लोकतंत्र के लिए घातक है। भाजपा जन–उम्मीद की किरण है। भ्रष्टाचार के विरोध में भाजपा देशभर में आंदोलन चला रही है। भ्रष्टाचार सुशासन में बाधक है। जब भारत भ्रष्टाचारमुक्त होगा तभी हम सच्चे मायनों में विश्वगुरू बन पाएंगे। ■

श्रीलंका के नौसैनिकों द्वारा भारतीय मछुआरों की हत्या पर केन्द्र और तमिलनाडु सरकार की उदासीनता दुर्भाग्यपूर्ण

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी द्वारा 30 जनवरी का प्रेस वक्तव्य

Hkkरतीय जनता पार्टी श्रीलंका की नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की हत्या की घोर निंदा करती है। यह देखकर भारी दुख होता है कि तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र मछली पकड़ने के समय श्रीलंका की नौसेना की गोलियों से पांच सौ से अधिक मछुआरों को जान से हाथ धोना पड़ा। चेन्नई की यात्रा के दौरान देखा गया कि मछुआरा समुदाय में बेहद आक्रोश है। तमिलनाडु के लोगों ने राज्य में डीएमके–नीत–सरकार और केन्द्र में कांग्रेस–नीत–यूपीए सरकार के संवेदनहीन और निष्क्रिय रवैये पर नाराजगी व्यक्त की है। यह स्मरण कर दुख होता है कि केवल पिछले पन्द्रह दिनों में ही हमने दो जिन्दगियां खोते देखा है। भाजपा ने इस स्थित को बड़ी गम्भीरता से लिया है और हम इसे संसद के अंदर और बाहर जोर–शोर से उठाएंगे।

Mh,ed&uhr&dkxl xBcaku ljdkj e 'kklu dju dk vHkko

प्रशासन करने का अभाव साफ नजर आता है। यह देखकर दुख ही होता है कि एक के बाद एक उद्योग राज्य के बाहर जाते जा रहे हैं। आटो मोबाइल उद्योग, जो श्रीपेरूम्बरम से विकसित हो रहा था, उसे भी इसके चलते रहने में शंका हो रही है जिसके पीछे बाजार की बाधाएं सामने आ रही हैं। इन बकाया संकटग्रस्त मुद्दों का समाधान करने में राज्य सरकार की विफलता के कारण यह उद्योग अन्य बेहतर जगहों की तलाश कर रहा है। तमिलनाडु में दक्ष मजदूरों की काफी बड़ी संख्या है, परन्तु उन्हें अब तो अपनी नौकरी गंवाने का खतरा पैदा हो गया है।

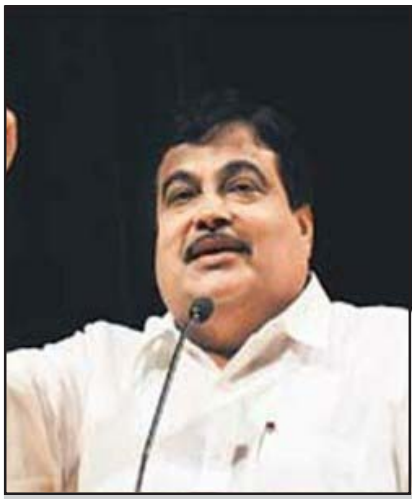

भारतीय जनता पार्टी श्रीलंका की नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की हत्या की घोर निंदा करती है। यह देखकर भारी दुख होता है कि तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र मछली पकड़ने के समय श्रीलंका की नौसेना की गोलियों से पांच सौ से अधिक मछुआरों को जान से हाथ धोना पड़ा।

fodkl dk fy, ty&,d leL;k

भाजपा मानती है कि तमिलनाडु में कृषि और उद्योगों की अधिकतम सम्भावना को पूरा किया जा सकता है बशर्तें कि वहां की नदियों को आपस में जोड़कर स्थायी रूप से जल की कमी को पूरा किया जा सके। गुजरात की कृषि सफलता का रहस्य यही रहा है वहां भाजपा नीत सरकार ने नदियों को आपस पर जोड़ने का प्रयास किया। गुजरात ने अपनी चौदह नदियों को आपस से नर्मदा के साथ जोड़ा। भाजपा अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना चाहती है कि यदि हमें सत्ता में आने का अवसर मिला तो सबसे पहले हम इसी कार्य पर जोर देंगे।

dkxl&Mh,ed dher fu;f=r dju e foQy

केन्द्र और राज्य दोनों स्थानों पर कांग्रेस–डीएमके के गठजोड़ से बनी सत्ता में रहते हुए ये दोनों सरकारें बढ़ती कीमतें रोकने में बुरी तरह असफल रही है। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण आम आदमी के जीवन को बदहाल बना दिया है।

;ih, dh ith ckgj tku ij xgjh fuf"Ø;rk

भाजपा निरंतर ही टैक्स–हेवन वाले विदेशों में काले धन का मुद्दा उठाती रही है। यूपीए सरकार दोहरे कराधान की आड़ में उन खातेधारियों का नाम तक बताने से संकोच कर रही है जिसके परिणामस्वरूप इस मुद्दे पर सरकार का रवैया कहीं अधिक संदेह पैदा करते हुए उसकी ईमानदारी पर प्रश्न लगा रहा है। भाजपा मानती है कि राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाएं, जो सदियों से संसाधनों की कमी के कारण रूकी पड़ी है, उन्हें तुरंत शुरू किया जा सकता है बशर्ते कि यह काला धन वापस देश में आ जाए। ■

भाजपा शासित राज्यों के साथ भेदभाव खत्म करो : गडकरी

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने मध्य प्रदेश के किसानों पर पड़ी आपदा की स्थिति को सामने रखते हुए और राज्य के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान करने का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को 3 फरवरी 2011 को पत्र लिखा है। हम यहां उनके पूर्ण पाठ का भावानुवाद अपने सुधी पाठकों के लिए कर रहे हैं:—

दिनांक 3 फरवरी 2011

fi; Mk- flg]

ueLdkj

जैसा आपको विदित है कि मध्य प्रदेश में अत्यंत शीत मौसम होने के कारण राज्य के कई भागों में खड़ी फसल एकदम बर्बाद हो गई। तुर, चना, दालें और आलू जैसी फसलें पाले और हिमशीत की चपेट में आकर कई क्षेत्रों में बुरी तरह बर्बाद हुई है। इससे तीस लाख किसान बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। राज्य सरकार की सर्वे रिपोर्ट से पता चलता है कि 50 जिलों में से 46 जिलों में यह फसलें इतनी बर्बाद हो चुकी हैं कि इन फसलों से किसान को कुछ भी हासिल नहीं हो पाएगा। राज्य सरकार के प्रारम्भिक अनुमान के अनुसार रबी फसल का नुकसान 7600 करोड़ रूपए तक पहुंचेगा।

राज्य के मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्य प्रदेश सरकार ने किसानों को राहत पहुंचाने के लिए तुरंत कदम उठाए हैं। तदर्थ राहत के आधार पर राज्य सरकार ने 5200 करोड़ रूपए के अल्पकालीन कृषि उधार माफ कर दिए हैं, किसानों को गैर—लाइसेंसधारी साहूकारों के ऋण माफ करने और निजी साहूकारों के ब्याज निर्धारित करने को कहा है। राज्य सरकार ने राहत कोष से पाला प्रभावित किसानों को इस सप्ताह 500 करोड़ रूपए से बढ़ाकर 700 करोड़ रूपए कर दिया है।

मध्य प्रदेश सरकार ने पहले ही केन्द्र सरकार ने 2442 करोड़ रूपए की आर्थिक मदद मांगी है। इसके अलावा राज्य सरकार ने सरकारी बैंकों से बैंक ऋणों पर ब्याज की वसूली को स्थगित करने तथा फसल बीमा योजना में एक इकाई के रूप में किसान को शामिल करने की मांग भी की है।

राज्य के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मुझे बताया है कि राज्य में स्थिति गम्भीर है। वह मध्यप्रदेश में किसानों की बदहाली के प्रति केन्द्र सरकार की पूर्ण उदासीनता से बेहद निराश हो गए हैं और उन्होंने किसानों को केन्द्र सरकार द्वारा राहत पहुंचाने के लिए राज्य को पर्याप्त मदद न देने के विरोध में 13 फरवरी 2011 से अनशन करने का निर्णय लिया है।

यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुख्यमंत्री द्वारा औपचारिक रूप से की गई मांग पर केन्द्र सरकार उपेक्षा कर रही है और संकीर्ण राजनीतिक विचारों से कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षा को खुश करने के लिए राजनैतिक नेताओं के माध्यम से नाम—मात्र की राहत दे रही है। हम पीएमओ की राजनैतिक नाटकबाजी का घोर विरोध करते हैं। भाजपा केन्द्र सरकार के इस अभूतपूर्व रवैये को बहुत गम्भीरता से लेती है जो केन्द्र—राज्यों के अच्छे सम्बंधों के सभी सिद्धांतों के खिलाफ है।

मैं आपसे अपील करता हूं कि दलगत विचारों से ऊपर उठ कर और भाजपा शासित राज्यों के प्रति भेदभाव न रखते हुए कार्रवाई करें। प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों को देखते हुए मध्य प्रदेश के किसानों के हितों और इस कारण हुई हानि को केन्द्र तथा राज्य सरकार दोनों को ही परम महत्व दिया जाना चाहिए।

मैं इस गम्भीर मामले में आपका निजी हस्तक्षेप चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि मध्य प्रदेश के लोगों की महत्वाकांक्षाओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाएगा और अविलम्ब ही राज्य सरकार को पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी।

हार्दिक आदर सहित,

Hkonh;

¼fufru xMdjh½

विदेशों में भेजे कालेधन को वापस लाने के लिए कारगर कानून बने : लालकृष्ण आडवाणी

राजग के कार्यकारी अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा 1 फरवरी को जारी वक्तव्य

jk जग ने 'इण्डियन ब्लैक मनी एब्राड इन सीक्रेट बैंक और टैक्स हैवन' अर्थात् गोपनीय बैंकों और टैक्स–हेवन ने विदेशी बैंकों में भारतीय कालाधन ''विषय पर चर्चा आयोजित की। आधिकारिक प्रसंगों से इस रिपोर्ट में विश्व अर्थव्यवस्था के बहु–आयामी परिप्रेक्ष्य, भू–राजनैतिक और विश्व–वित्तीय संकट सम्बंधी मुद्दे लिए गए हैं। इसमें कुछ राष्ट्रीय प्रयासों का जिक्र भी है जो भारत से बाहर गए धन के प्रवाह को रोकने और उसे वापस लाने के लिए आवश्यक है।

अप्रैल 2009 में पहली रिपोर्ट पेश की गई थी। एनडीए ने कार्यदल की रिपोर्ट को मोटेतौर पर स्वीकार किया था।

दूसरी रिपोर्ट की प्रति तथा इसके सारांश को मीडिया में वितरित किया जा रहा है और भाजपा की वेबसाइट पर दिया गया है।

आईएमएफ का अनुमान है कि विश्वभर में कालीअर्थव्यवस्था की राशि अमरीकी 18 बिलियन की है जो अनुमान से कम ही प्रतीत होती है। भारत के वित्त मंत्री का भी अनुमान है कि विभिन्न कर–हेवन की बाहर ले जाई गई राशि लाखों–लाखों करोड़ रूपए में बैठती है।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने विदेशों में भेजी गई राशि को 'चोरी' और 'लूट' बताया है। भारत सरकार इस मामले को केवल कर–अपवंचना मानती है। 'ग्लोबल फिनांश्यल इंट्रेगिरी', का कहना है कि विदेशों में भेजा गया काला धन ''कर–अपवंचना, भ्रष्टाचार और दलाली तथा अन्य प्रकार की आपराधिक गतिविधियों'' का पैसा है। सरल शब्दों में काला धन और इससे बना विदेश में भेजा गया पैसा देशभक्तिविहीन कार्य है और यह आर्थिक आतंकवाद माना जाना चाहिए।

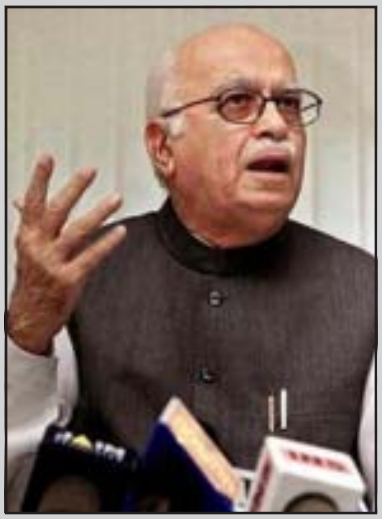

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने विदेशों में भेजी गई राशि को 'चोरी' और 'लूट' बताया है। भारत सरकार इस मामले को केवल कर–अपवंचना मानती है। ग्लोबल फिनांश्यल इंट्रेगिरी, आर्थिक पारदर्शिता की एक सार्वभौमिक एनजीओ को कहना है कि विदेशों मे भेजा गया काला धन ''कर–अपवंचना, भ्रष्टाचार और दलाली तथा अन्य प्रकार की आपराधिक गतिविधियों'' का पैसा है। सरल शब्दों में काला धन और इससे बना विदेश में भेजा गया पैसा देशभक्ति विहीन कार्य है और यह आर्थिक आतंकवाद माना जाना चाहिए।

बहुत पहले 2007 में श्री एम.के. नारायण, तत्कालीन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने अपनी चिंता जताते हुए कहा था कि यह वित्तीय बाजारों के माध्यम से आया आतंकवादी धन होने की संभावना है।

रिपोर्ट में कहा है कि इसमें न केवल अमरीका जैसे शक्तिशाली देश बल्कि फिलीपाइन, पेरू, नाइजीरिया और ट्यूनिशिया जैसे छोटे देश भी विश्व की राय में शामिल है और स्विस सरकार को भ्रष्ट नेताओं द्वारा भेजे गए सहस्त्रों डालरों को वापस लाने के लिए सहायता कर सकते हैं। इसकी तुलना में भारत में घूसखोरी और मनीलांड्रिंग ने विश्व–विख्यात मामले, जिनमें लिचस्टेन बैंक द्वारा उद्घाटित धन, हसन अली का हवाला मामला, क्वात्रोची मामला और कांग्रेस पार्टी से जुड़े भारत के पूर्व प्रधानमंत्री में रखे गए कथित विदेशी खातों की जांच नहीं हुई है या जांच की झलक मात्र दिखाई पड़ी है। इसके अलावा भी प्रवर्तन निदेशालय 2008 में अली की गिरफ्तारी का 'प्रस्ताव' किया था, फिर भी उसे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया।

सरकार ने जून 2009 में संसद के

राष्ट्रपति सम्बोधन के माध्यम से घोषणा की थी कि सरकार सम्बन्धित देशों के साथ मिलजुल कर सभी आवश्यक उपायों पर जोरदार ढंग से कार्रवाई करेगी। एनडीए को यह देख कर निराशा होती है कि इसके बावजूद भी सरकार ने इस विषय पर कोई खास प्रगति नहीं की है। भारत सरकार ने तो भ्रष्टाचार के खिलाफ यू.एन कंवेंशन को भी अभिपुष्ट नहीं किया है, जिसमें देश से बाहर भेजे गए धन को वापस प्राप्त करने की प्रक्रिया का प्रावधान है।

यह महत्वपूर्ण है कि 19 जनवरी 2011 को भारत के सुप्रीम कोर्ट ने सभी 'अनजाने भारतीय चेहरों' के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है जिन्होंने विदेशों में अपनी भ्रष्टाचार गतिविधियों से कमाए धन को भेजा है और इसे ''मात्र कर अपवंचना न माना जाए।''

मैं समझता हूं कार्यदल द्वारा सुझाए गए राजनीतिक वर्ग से नैतिक तथा आचरण प्रत्युत्तर का सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि राजनैतिक वर्ग को संदेह से ऊपर उठना आवश्यक है। कार्यदल का सुझाव है कि राजनैतिक दलों के नेताओं और महत्वपूर्ण पदाधिकारियों और सांसदों को घोषणा करनी चाहिए कि वे तथा उनके करीबी रिश्तेदारों के पास विदेशों में कोई गुप्त धन नहीं है और उन्हें प्रवर्तन निदेशालय को और आय–कर विभाग को व्यक्तिगत पत्र सौंपने चाहिए और इन विभागों को अधिकृत किया जाना चाहिए वे किसी भी सरकार या बैंक से विदेश में जमा किसी धन के बारे में पता लगाने के लिए जांच कर सकते हैं। इस सराहनीय सुझाव से निश्चित ही राजनीतिक कार्यों में लोगों का विश्वास बहाल करने की मंशा है।

अप्रैल 2008 में, मैंने विदेशी बैंकों में भेजे गए भारतीय धन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री को पत्र लिखा था। यह विशेष रूप से एलटीजी बैंक, लिचस्टेन के सम्बंध में था।

भाजपा कार्यदल के प्रथम रिपोर्ट के बाद मैंने उन्हें वह रिपोर्ट भेजी और 19 अप्रैल 2009 के पत्र में उनसे इस विषय पर कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

6 जनवरी 2011 को एनडीए ने इस विषय पर विचार किया और एक विस्तृत पत्र प्रधान को भेजा। इस पत्र का उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

,uMh, dh ekx g fd&

- भारत सरकार को तुंरत ही भ्रष्टाचार के विरूद्ध यूएन कंवेंशन की अभिपुष्टि करे।
- राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी (एनआईए) और प्रवर्तन निदेशालय को अज्ञात आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर/शिकायत (जैसा कि पंजाब आतंकवाद और नगालैण्ड विद्रोह में की थी) दर्ज करनी चाहिए जिन्होंने विदेशों में मनी लांड्रिंग और आतंकवाद विरोधी नियमों के अन्तर्गत विदेशों को धन भेजा तथा जांच, पूछताछ और गिरफ्तारी तक करके जांच कार्य शुरू करनी चाहिए। 'आमनीबस' (बहुप्रयोजन) एफआईआर से निरंतर जांच कार्य किया जा सकता है और निरंतर प्रगति हो सकती है। जैसे–जैसे जांच कार्य चलता रहेगा, इससे अनेक विधि एफआईआर और अभियोजन में सुविधा होगी परन्तु फिर भी 'UMBRELLA' (संरक्षण) एफआईआर जारी रहनी चाहिए जिससे काले धन के खिलाफ आंदोलन जारी रहे।
- आईएमएफ और जीएफआई की रिपोर्टों को स्वीकार करते हुए भारत सरकार को कानून बनाना चाहिए क्योंकि भारत सरकार को अवैध रूप से विदेशों में भेजी गई विशाल भारतीय पूंजी को इन भारतीयों ने भारत से बाहर भेजा है। इन नए कानून के माध्यम से यह घोषित किया जाना चाहिए कि भारत सरकार ऐसे समग्र धन, परिसम्पत्ति और बैंक खातों की लाभार्थी होंगे, जिन्हें भारतीय राष्ट्रिकों के लाभ के लिए या विदेशों में खातों के रूप में रखा गया है। इस कानून में कार्यदल द्वारा सुझाए गए संसाधित खण्डों को भी ले लिया जाए ताकि अन्य राष्ट्रों को भी यह स्वीकार्य हो। उक्त कानून के आधार पर भारत सरकार अन्य देशों को कह सकता है कि जहां कही भी स्विट्जरलैण्ड की तरह के गोपनीय बैंकिंग व्यवस्था होती है तो वे भी भारत सरकार को अघोषित धन का लाभार्थी माने और उनके पास धन को सार्वजनिक करे।
- उक्त कानून के आधार पर भारत सरकार विश्व की अन्य सरकारों और स्विस बैंकों के समान गोपनीयता रखने वाले विभिन्न बैंकों से कह सकते हैं कि वे भारतीय सरकार को अघोषित धन, बैंक खाता और भारतीय राष्ट्रिकों की अन्य परिसम्पत्तियों का लाभार्थी माने, जब तक कि धन, बैंक खाता या अन्य परिसम्पत्तियों का स्वामी यह साबित न कर दे कि उसने वह धन समुचित साधनों और वैध स्रोतों से अर्जित किया है।

अन्ततः मैं भारत के लोगों, न्यायपालिका, मीडिया, बुद्धिजीवियों, विद्वत्जनों और सभी सार्वजनीन भावना रखने वाले नागरिकों से अपील करता हूं कि वे भारत सरकार और राजनैतिक नेताओं पर दबाव बनाएं तथा उन्हें तुरंत ही आगे की निर्णायक कार्रवाई करने पर मजबूर करें। ■

सी.वी.सी. की नियुक्ति का सच

श्रीमती सुषमा स्वराज, नेता प्रतिपक्ष (लोकसभा) द्वारा
01 फरवरी, 2011 को जारी प्रेस वक्तव्य

सी.वी.सी. की नियुक्ति के लिए एक कमेटी गठित की जाती है। प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता इस कमेटी के सदस्य होते हैं। इस बार सी.वी.सी. की नियुक्ति के लिए गठित कमेटी की बैठक दिनांक 3.09.2010 को बुलाई गई। सरकार की तरफ से तैयार किया गया 3 अधिकारियों का पैनल कमेटी के सदस्यों को दिया गया जिसमें एक नाम श्री थॉमस का, दूसरा सेक्रेटरी कैमिकल और पैट्रो कैमिकल श्री चैटर्जी का और तीसरा नाम सेक्रेटरी फर्टीलाइजर श्री कृष्णन का था। बैठक के शुरू होते ही प्रधानमंत्री ने मुझसे मेरी राय जाननी चाही। मैंने कहा श्री थॉमस के नाम पर मुझे आपत्ति है क्योंकि पामोलीन ऑयल काण्ड में इनके खिलाफ एक केस है, अन्य दो नामों में से आप किसी को भी चुन लें, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी, मैं अपनी सहमति दूंगी।

इस पर गृहमंत्री श्री चिदम्बरम जी ने कहा कि श्री थॉमस उस केस में बरी हो चुके हैं और अब कोई केस उनके खिलाफ नहीं है। मैंने प्रधानमंत्री से कहा कि आप मीटिंग 24 घंटे के लिए स्थगित कर दें और इस तथ्य की जांच करा लें। प्रधानमंत्री बोले कि मंगलवार को तो सी.वी.सी. की शपथ ही होनी है इसलिए फैसला आज ही करना होगा। मैंने कहा आज तो शुक्रवार ही है। कल शनिवार को बैठक हो सकती है और मंगलवार को शपथ होने में कोई दिक्कत नहीं आएगी, हम कल फैसला कर लेंगे। उन्होंने मेरे इस अनुरोध को रद्द कर दिया।

चिदम्बरम जी ने कहा कि श्री थॉमस सेक्रेटरी भी तो बनाए गए थे इसलिए आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। तो मैंने कहा कि सेक्रेटरी बनाने और सी.वी.सी. बनाने में बहुत अन्तर होता है। सी.वी.सी. के लिए व्यक्ति पूरी तरह बेदाग होना बहुत जरूरी है और जब अपने पास पैनल में दो अन्य नाम उपलब्ध हैं तो फिर श्री थॉमस के नाम की जिद्द क्यों? ये नाम मैंने तो छांटे नहीं हैं, सरकार ने ही पैनल तैयार करवाया है और यदि बाकी दो नाम आपको पसन्द नहीं हैं तो बहुत से ईमानदार और अच्छे अधिकारी इस पैनल के बाहर भी उपलब्ध हैं। आप उनको पैनल में डाल दीजिए, हम उनके नामों पर विचार कर लेंगे।

चिदम्बरम जी ने कहा कि श्री थॉमस सेक्रेटरी भी तो बनाए गए थे इसलिए आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। तो मैंने कहा कि सेक्रेटरी बनाने और सी.वी.सी. बनाने में बहुत अन्तर होता है। सी.वी.सी. के लिए व्यक्ति पूरी तरह बेदाग होना बहुत जरूरी है और जब अपने पास पैनल में दो अन्य नाम उपलब्ध हैं तो फिर श्री थॉमस के नाम की जिद्द क्यों? ये नाम मैंने तो छांटे नहीं हैं, सरकार ने ही पैनल तैयार करवाया है और यदि बाकी दो नाम आपको पसन्द नहीं हैं तो बहुत से ईमानदार और अच्छे अधिकारी इस पैनल के बाहर भी उपलब्ध हैं। आप उनको पैनल में डाल दीजिए, हम उनके नामों पर विचार कर लेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि नहीं, आज ही निर्णय करना है। तो मैंने कहा कि आज ही निर्णय करना है और थॉमस को ही करना है, यह आपने ठान ही रखा है तो फिर मैं अपनी असहमति दर्ज कराऊंगी। प्रधानमंत्री बोले ठीक है दर्ज करा दीजिए। इसके तुरन्त बाद उन्होंने श्री पृथ्वीराज चव्हाण को जो मीटिंग के कमरे के बाहर ही बैठे थे, बुलाया और कहा कि वो मीटिंग की कार्यवाही का एक पत्र बनवा लाएं जिसमें लिख दें कि हम बहुमत से सी.वी.सी. के लिए श्री थॉमस का चयन कर रहे हैं और नेता प्रतिपक्ष इससे

सहमत नहीं हैं।

15 मिनट बाद श्री पृथ्वीराज चव्हाण वो पत्र तैयार करके ले आए। उस पर हम तीनों के हस्ताक्षर होने थे। जब वो पत्र मेरे सामने हस्ताक्षर के लिए रखा गया तो मैंने कहा कि मैं इस पत्र पर अपनी असहमति लिखूंगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि आपकी असहमति की बात पत्र में लिख दी गयी है। मैंने कहा कि मैं अपनी असहमति अपने हाथ से दर्ज कराऊंगी और मैंने हस्ताक्षर करते समय हाथ से लिखा 'I disagree'। और इसके बाद प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने उस पर हस्ताक्षर करके पत्र श्री पृथ्वीराज चव्हाण को लौटा दिया। श्री थॉमस की नियुक्ति के लिए हुई मीटिंग की यह अक्षरशः कहानी है।

27 जनवरी को इलैक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से एक खबर आई कि सुप्रीम कोर्ट में सी.वी.सी की नियुक्ति को लेकर चल रही याचिका में एटॉर्नी जनरल ने सरकार की तरफ से यह कहा कि चयन समिति को श्री थॉमस के खिलाफ चल रहे पॉमोलिन केस की जानकारी ही नहीं थी। इस पर तुरन्त प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मैंने कहा कि यह असत्य और निराधार है क्योंकि मैंने स्वयं यह जानकारी प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को दी थी जो समिति के अन्य दो सदस्य हैं और इसी आधार पर श्री थॉमस के चयन पर आपत्ति जताई थी। जब उन्होंने मेरी आपत्ति को दरकिनार करते हुए भी श्री थॉमस का ही चयन किया तो मैंने लिखित में अपनी असहमति दर्ज कराई थी। मैंने यह भी कहा कि सुप्रीम कोर्ट को सही तथ्यों से अवगत कराने के लिए मैं अपनी ओर से एक हलफनामा पेश करूंगी। मेरे इस बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कल गृह मंत्री ने अपनी मासिक प्रेस कांफ्रेस में इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि पॉमोलिन केस की जानकारी नेता प्रतिपक्ष ने समिति को दी थी और उनकी असहमति भी इसी आधार पर दर्ज कराई गयी थी। गृह मंत्री द्वारा इन तथ्यों को स्वीकार करने के बाद मेरे द्वारा हलफनामा देने की आवश्यकता नहीं रह जाती किन्तु मैं यह अवश्य लिखना चाहूंगी कि श्री चिदम्बरम का यह कहना कि श्री थॉमस के पॉमोलिन केस पर विस्तृत विचार–विमर्श के बाद ही हमने उनके पक्ष में निर्णय लिया, सत्य से परे है क्योंकि श्री थॉमस के खिलाफ कोई केस है, यह जानकारी सरकार ने समिति के सदस्यों को दी ही नहीं थी और जब मैंने यह जानकारी अपनी ओर से समिति को दी तो गृह मंत्री ने उसे यह कह कर खारिज कर दिया कि श्री थॉमस उस केस में बरी हो चुके हैं इसलिए केस के पक्ष पर चर्चा नहीं हुई बल्कि इस बात पर चर्चा हुई कि जो व्यक्ति केस में बरी हो चुका है क्या वो सी.वी.सी. की नियुक्ति के लिए अपात्र हो सकता है। मैं इस बात पर अड़ी थी कि उनके खिलाफ अभी–भी केस चल रहा है लेकिन चर्चा को आगे

बढ़ाने के लिए मैंने कहा कि एक मिनट के लिए मैं मान भी लूं कि वो केस में बरी हो चुके हैं तो भी सी.वी.सी. की नियुक्ति के लिए व्यक्ति का पूरी तरह बेदाग होना जरूरी है और श्री थॉमस उस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इसलिए हमें अन्य दो में से किसी एक को चुनना चाहिए। लेकिन प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने यह बात नहीं मानी और हठधर्मिता दिखाते हुए मेरी असहमति के बावजूद श्री थॉमस का ही चयन किया। सी.वी.सी. की नियुक्ति का यही सच है।

मैं गृह मंत्री जी की इस टिप्पणी का भी उत्तर देना चाहूंगी कि जो मामला कोर्ट में चल रहा है उस पर राजनेताओं द्वारा बाहर बोला जाना उचित नहीं है। मैं गृह मंत्री से पूछना चाहती हूं कि सी.वी.सी. की नियुक्ति को लेकर अनेक चर्चाएं इलैक्ट्रानिक मीडिया के विभिन्न चैनलों पर आयोजित की गयीं और उन सबमें उनकी पार्टी के प्रवक्ताओं ने भाग लेकर अपनी सरकार के बचाव में अनेक बातें कहीं जिनमें से कई असत्य थीं। मैंने तो केवल रिकार्ड सही करने के लिए सत्य ही बोला है। सच के लिए rule of subjudice लागू होता है और असत्य बोलने के लिए यह नियम लागू नहीं होता। यह कौन सा सिद्धान्त है और कौन सा न्याय। सरकार की ओर से इस मामले में एक बार नहीं कई बार गलतबयानी की गयी है लेकिन सत्य जनता के सामने आ जाए इसलिए मैं मीटिंग का अक्षरशः विवरण दे रही हूं।■

मैं गृह मंत्री जी की इस टिप्पणी का भी उत्तर देना चाहूंगी कि जो मामला कोर्ट में चल रहा है उस पर राजनेताओं द्वारा बाहर बोला जाना उचित नहीं है। मैं गृह मंत्री से पूछना चाहती हूं कि सी.वी.सी. की नियुक्ति को लेकर अनेक चर्चाएं इलैक्ट्रानिक मीडिया के विभिन्न चैनलों पर आयोजित की गयीं और उन सबमें उनकी पार्टी के प्रवक्ताओं ने भाग लेकर अपनी सरकार के बचाव में अनेक बातें कहीं जिनमें से कई असत्य थीं। मैंने तो केवल रिकार्ड सही करने के लिए सत्य ही बोला है। सच के लिए rule of subjudice ***लागू होता है और असत्य बोलने के लिए यह नियम लागू नहीं होता। यह कौन सा सिद्धान्त है और कौन सा न्याय। सरकार की ओर से इस मामले में एक बार नहीं कई बार गलतबयानी की गयी है।***

सरकार की मंशा विदेशों में काले धन का पता लगाने और कार्रवाई विमुख बने रहने की है

भाजपा महासचिव एवं प्रमुख प्रवक्ता श्री रविशंकर प्रसाद, सांसद द्वारा 25 जनवरी को जारी प्रेस वक्तव्य

यह सचमुच विडम्बना ही है कि विश्वभर के बैंकों में, जिनमें स्विस बैंक भी शामिल है, काले धन और विदेशी खातों पर सरकार की और जिस वक्तव्य की लम्बे समय से प्रतीक्षा हो रही थी, उस पर आज वित्तमंत्री श्री प्रणब मुखर्जी का बयान न केवल टालमटोल वाला है, बल्कि बेहद अस्पष्ट है। इस सम्बंध में हमें इसके प्रसंग की तह में जाना होगा।

2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान यह मुद्दा देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। भाजपा संसदीय दल के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने इसे बहुत प्रभावी और जोरदार ढंग से उठाया था। आरम्भ में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन ने इसे चुनावी 'स्टंट' का नाम दिया था। श्री चिदम्बरम ने कहा था कि श्री आडवाणी कालाधन खातधारियों को सचेत कर रहे हैं। किन्तु जब कांग्रेस को महसूस होने लगा कि यह मुद्दा तो बड़ा गम्भीर है और लोगों में इसके प्रति भारी समर्थन फैल रहा है तो स्वयं कांग्रेस घोषणा पत्र में उसने सत्ता में आने के सौ दिनों के अन्दर सार्थक कदम उठाने की घोषणा की थी।

अब, आज जब पूरा देश इससे आक्रोशित है और यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि यह तो 'लूट' है, तो हम देखते हैं कि सरकार का लगभग दो वर्षों का रवैया ही न केवल ढुलमुल है, बल्कि सरकार में इस मुद्दे पर पर्याप्त रूप से और सार्थक ढंग से काम करने का अभाव साफ दिखाई दे रहा है और वह विदेशी बैंकों में काली कमाई से जोड़े गए धन वाले लोगों का नाम तक भी देश को बताना नहीं चाहती है। अब श्री मुखर्जी की टिप्पणी को ही देखिए जिसमें उनका कहना है कि ''अवैध ढंग से जमा किए धन की अनुमानित राशि के अध्ययन के लिए ''मल्टीडिसीप्लिनरी कमेटी'' का गठन पहले ही कर दिया गया है और वह पंच–उन्मुखी रणनीति का निर्माण किया गया है जिसमें विश्वभर में काले धन के लिए जेहाद में शामिल होना भी शामिल है, उनका यह कथन एक दिखावे वाली घोषणा मात्र है जिसमें उनकी काले धन का पता लगाने के लिए किसी समयबद्ध कार्यक्रम करने की जरा भी मंशा नहीं है और वे देश के लोगों के विदेशों के खाताधारियों तक के ब्यौरे भी बताना नहीं चाहते हैं।

समझा जाता है कि लिंचस्टेन सरकार ने खाताधारियों के नामों को बताने पर सहमति प्रगट की है। इसमें कोई गोपनीयता का खंड नहीं है। फिर भी सरकार ने इस पर आगे कार्रवाई नहीं की। अमरीका ने तो दोहरी कराधान व्यवस्था के बावजूद भी स्विस बैंक सरकार को बाध्य कर अपनी अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए टैक्स गबनकारियों के नामों को प्रगट करने की बात कह दी है। भारत भी विश्व में कोई ''थर्ड वर्ल्ड इकानामी'' अर्थात् दुर्बल विश्व अर्थव्यवस्था नहीं रह गई है, बल्कि भारत एक उभरती अर्थव्यवस्था ताकत बन चुकी है, जिस की जी–20 देशों में जोरदार आवाज है, तो समझ नहीं आता कि क्या कारण है कि सरकार अपनी इस ताकत

सरकार मामले पर कोई आगे कार्रवाई करने में संकोच दिखा रही है क्योंकि नामों का उद्घाटन करने से केवल सरकार ही, बल्कि उससे भी अधिक कांग्रेस पार्टी फंसेगी। यहां तक कि श्री मुखर्जी ने तो उन देशों के नाम भी नहीं बताए कि कितने भारतीयों के नाम विदेशी बैंकों और टैक्स–हेवन वाले देशों में हैं और उनके खिलाफ कर–अपवंचना और अन्य नियमों के उल्लंघन के बारे कितने विभिन्न मामले लम्बित हैं। सरकार की मंशा ही पूरी तरह से संदिग्ध है।

का प्रयोग नहीं कर पा रही है।

glu vyh dk ekeyk

इस सम्बंध में पुणे का हसन अली का मामला विशेषज्ञ रूप से उल्लेखनीय है। दो वर्ष से भी अधिक समय से प्रवर्तन निदेशालय और वित्त विभाग की अन्य जांच विभागों ने उनके खाते के विदेशी धन के असाधारण प्रवाह के मामले की जांच शुरू की। एजेंसियों ने बताया कि उसने लगभग 76,000 करोड़ रूपए का कर–अपवंचन किया है। उन्हें हिरासत में भी लिया और आश्चर्य यह है कि उनके मामले की ठीक तरह जांच नहीं हुई जिससे उन्हें जमानत मिल गई। उनके खिलाफ ''मनीलॉड्रिंग'' के भी गम्भीर आरोप थे और यह भी पता चला है कि स्विस बैंक अथारिटीज भी उनके बारे में सब कुछ बता देना चाहती थी, परन्तु अचानक ही पूरी प्रक्रिया को ही धीमी कर दिया गया। आज भी श्री प्रणब मुखर्जी ने बड़ा अस्पष्ट सा उत्तर दिया कि मामले की जांच चल रही है।

बोफोर्स मामले में भी, आयकर अपीलीय अधिकरण ने गवाहों की विस्तृत जांच के बाद यह पाया था कि विदेशों में अर्जित दलाली और जमा धन राशि कर योग्य हैं। सरकार ने इस पर कार्रवाई करने की बजाए लगभग इस निर्णय को ही खारिज कर दिया क्योंकि इसका सम्बंध उस बदनाम 'क्वात्रोची एंगल' से जुड़ा था। आसपास के पूरी परिस्थितियां भी इतनी अधिक संशयप्रद है, जिनसे कहा जा सकता है कि सरकार मामले पर कोई आगे कार्रवाई करने में संकोच दिखा रही है क्योंकि नामों का उद्घाटन करने से केवल सरकार ही, बल्कि उससे भी अधिक कांग्रेस पार्टी फंसेगी। यहां तक कि श्री मुखर्जी ने तो उन देशों के नाम भी नहीं बताए कि कितने भारतीयों के नाम विदेशी बैंकों और टैक्स–हेवन वाले देशों में हैं और उनके खिलाफ कर–अपवंचना और अन्य नियमों के उल्लंघन के बारे कितने विभिन्न मामले लम्बित हैं सरकार की मंशा ही पूरी तरह से संदिग्ध है।

भाजपा देश और लोगों को आश्वस्त करना चाहती है कि भाजपा संसद के अंदर और बाहर काले धन के स्रोतों और विदेशी बैंकों में भारतीय खातेधारियों के नामों का पता लगाने में काम करती रहेगी जिन्होंने विदेशों में अवैध ढंग से पैसा जमा कराया हुआ है। ■

भाजपा आर्थिक प्रकोष्ठ

राजा की गिरफ्तारी पर्याप्त नहीं : नितिन गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि राजा को गिरफ्तार करना पर्याप्त नहीं है. कांग्रेस नीत संप्रग सरकार को विदेशी बैंकों में कालाधन जमा करने वाले भारतीयों का नाम जाहिर करना चाहिए। कालाधन पर भाजपा के आर्थिक प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित समारोह में श्री गडकरी ने कहा कि विपक्षी दल

के नाते रोज ब रोज सामने आ रहे भ्रष्टाचार पर प्रभावी लगाम लगाने में भाजपा की भी भूमिका है। पार्टी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए देश में एक प्रभावी कानून की मांग करती है। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक राजा को गिरफ्तार करने से कुछ नहीं होगा, बल्कि राजा के पीछे 'गॉडफादर' कौन है...इसका खुलासा होना चाहिए. क्योंकि इस मामले में केवल राजा नहीं हैं बल्कि अन्य 'बाराती' भी हैं।

श्री गडकरी ने कहा कि राष्ट्रमंडल खेल के आयोजन और प्रसारण मामले में केवल एक शब्द से इतना बड़ा घोटाला हुआ कि तीन–चार हजार करोड़ रूपये के काम पर 70 हजार करोड़ रूपये से अधिक खर्च हो गए और इतने बड़े पैमाने पर घोटाला सामने आया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रमंडल खेल आयोजन से जुड़ी निविदा में लिखा था कि जिस कंपनी को ओलंपिक या राष्ट्रमंडल खेल के आयोजन का अनुभव हो, उसे ही ठेका दिया जाए. लाली (प्रसार भारती के पूर्व सीईओ) ने इसका फायदा उठाकर 132 करोड़ रूपये का चूना लगाया। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि इसी प्रकार स्टेडियम की मरम्मत पर कई गुना अधिक धन खर्च किया गया और छोटे–छोटे कामों का ठेका विदेशी कंपनियों को दिया गया जिससे बेहिसाब धन खर्च हुआ और इतने बड़े पैमाने पर घोटाला सामने आया।

इस कार्यक्रम में भाजपा आर्थिक प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित ''विदेशी बैंकों में जमा काले धन'' पर केन्द्रित पुस्तिका का विमोचन भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने किया। कार्यक्रम को आयोजित करने में प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री गोपाल अग्रवाल की भूमिका उल्लेखनीय रही। ■

थॉमस को सीवीसी पद से हटाने का साहस दिखाएं प्रधानमंत्री : भाजपा

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं सांसद श्री राजीव प्रताप रूडी द्वारा 29 जनवरी, 2011 को जारी प्रेस वक्तव्य

ehडिया में खुलासे के साथ ऐसा लगता है कि सीवीसी को उनके पद पर बनाए रखने के लिए एक बड़ी लॉबी काम कर रही है। जबकि सीवीसी पर लगाए गए आरोप स्थापित हो चुके हैं और सर्वोच्च न्यायालय भी उनकी नियुक्ति को गंभीरता से ले रही है, अब यह स्पष्ट हो गया है कि हस्तक्षेप के बावजूद सीवीसी ने इस्तीफा देने से लगभग इनकार कर दिया है। मुख्य विपक्षी भारतीय जनता पार्टी मांग करती है कि सीवीसी को तत्काल अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। यदि वो ऐसा नहीं करते हैं तो प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को साहस दिखाते हुए उन्हें उनके पद से हटा देना चाहिए।

सीवीसी पर लगाए गए आरोप स्थापित हो चुके हैं और सर्वोच्च न्यायालय भी उनकी नियुक्ति को गंभीरता से ले रही है, अब यह स्पष्ट हो गया है कि हस्तक्षेप के बावजूद सीवीसी ने इस्तीफा देने से लगभग इनकार कर दिया है। मुख्य विपक्षी भारतीय जनता पार्टी मांग करती है कि सीवीसी को तत्काल अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। यदि वो ऐसा नहीं करते हैं तो प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को साहस दिखाते हुए उन्हें उनके पद से हटा देना चाहिए।

jk"Vªh; foekuu dh yV

भारत के नियंत्रक–महालेखा परीक्षक ने अपनी रिपोर्ट में वर्ष 2006 में खरीदे गए एयर इंडिया और इंडियन एयरलायंस विमानन की खरीद के पीछे के तर्क पर गंभीर रूख अपनाया है।

राष्ट्रीय विमानन के पुनरुद्धार के लिये एयर इंडिया और इंडियन एयरलायंस के विलय और नए विमानों की खरीद– इन दो बातों को पूर्व शर्त माना जाता था। ये दोनों बातें वर्ष 2007 में हुईं। आज चार साल बाद, 100 विमानों की खरीद और विलय के बाद, स्थिति यह है कि इंडियन एयरलायंस और एयर इंडिया विमानन उद्योग में चौथे स्थान पर है और कुल शेयर बाजार का केवल 17 फीसदी हिस्सा इसके पास है।

वर्तमान समय में विमानन उद्योग 18–19 फीसदी की दर से अपनी वृद्धि दर्ज करा रही है जबकि एक निजी एयरलाइन, जो अपने उड़ान बेड़े के हिसाब से राष्ट्रीय विमानन की आधी है, दूसरे स्थान पर है।

भाजपा और देश के नागरिक सरकार से इसका कारण और शासकीय विमानन उद्योग में मची लूट के प्रति उत्तरदायी लोगों के बारे में जानना चाहती है। अब एक नए मंत्री के पदभार संभालने के बाद हम उम्मीद करते हैं कि सारी चीजों को ठीक कर दिया जाएगा और राष्ट्रीय संसाधन का सही इस्तेमाल होगा। भाजपा सरकार से पूरा तथ्य जानना चाहती है।

jkgqy xkaèkh d: oDrO; ij i;frfØ;k

कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी ने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और महंगाई पर तो बयान दिए हैं जबकि आम आदमी से जुड़े कई मुद्दों पर वे मौन रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस नेता से जानना चाहेगी कि क्यों आखिर वे 1.76 हजार करोड़ रुपए के 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेल्थ गेम्स में लोक–संपत्ति की हुई लूट और स्विस बैंक अकाउंट्स में जमा करोड़ों रुपए के भारतीय काले धन पर मौन हैं? देश में खाद्य मुद्रास्फीति 15–17 फीसदी के आसपास है जबकि कुल मुद्रास्फीति करीब 9 फीसदी के आसपास है। देश के लोगों को प्रसन्नता होगी यदि राहुल गांधी आम आदमी से जुड़े इन मुद्दों पर भी अपनी प्रतिक्रिया दें। ■

भ्रष्टाचार से कलुषित भारत और सुशासित गुजरात का उदाहरण

& ykyÑ".k vkMok.kh

Çत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस पर, राजपथ की परेड को देखने के बाद मैं अपने निवास पर भी झण्डावादन का छोटा कार्यक्रम आयोजित करता हूं। इसमें अधिकांश वे सुरक्षाकर्मी भाग लेते हैं जो वहां पर तैनात हैं: इस वर्ष मेरी सुपुत्री प्रतिभा ने उनके लिए एक घंटे के वृत्त चित्र 'वंदेमातरम' का शो प्रदर्शित किया।

उस अवसर पर उपस्थित मीडियाकर्मियों को मैंने कहा कि गणतंत्र दिवस एक ऐसा दिन है जब प्रत्येक भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए कि वह एक ऐसे महान देश से जुड़ा है जिसका सम्मान दुनिया भर में होता है।

इससे शायद ही कोई इंकार कर सकता है कि हाल ही में समाप्त हुए वर्ष ने हमारे देश के नागरिकों को न केवल अत्यंत निराशा और ठेस पहुचांई न केवल इसलिए खाद्य स्फीति और पेट्रोल, डीजल इत्यादि की कीमतों से आम आदमी के परिवार का बजट गड़बड़ा गया अपितु इसलिए भी कि पूरी दुनिया में हमारा देश दुनिया के सर्वाधिक भ्रष्ट देशों में जाना जाने लगा है।

इस अवसर पर, मैं कुछ महीने पहले दिल्ली में हुए राष्ट्रमंडल खेलों का स्मरण कराना चाहूंगा। विदेश सहित दुनियाभर के अपने मित्रों तथा परिचितों से बातचीत में खेलों का मुद्दा अवश्य आता था और उसमें हमें पता चला कि विदेशी टीवी चैनलों पर नई दिल्ली के खेलों के नाम पर केवल घोटालों और घपलों सम्बन्धी समाचार ही दिखाए जाते थे। इसलिए मुझे 'आउटलुक' वेबसाइट पर इस शीर्षक के अंर्तगत प्रकाशित ताजा रिपोर्ट देखकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ : "ट्रांसपेरेंसी करप्शन इंडेक्स में भारत 87वें क्रम पर लुढ़का।"

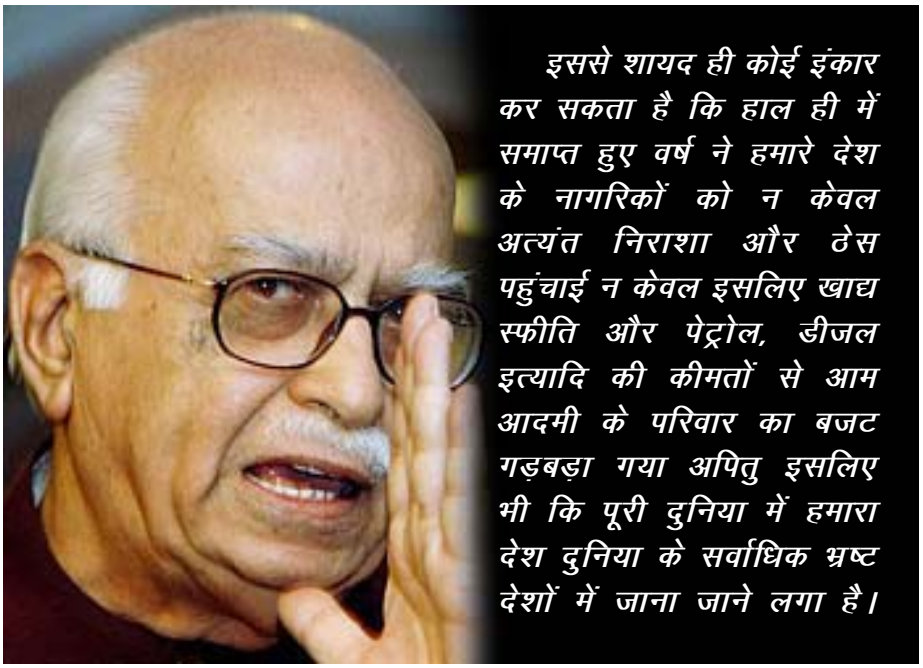

इससे शायद ही कोई इंकार कर सकता है कि हाल ही में समाप्त हुए वर्ष ने हमारे देश के नागरिकों को न केवल अत्यंत निराशा और ठेस पहुंचाई न केवल इसलिए खाद्य स्फीति और पेट्रोल, डीजल इत्यादि की कीमतों से आम आदमी के परिवार का बजट गड़बड़ा गया अपितु इसलिए भी कि पूरी दुनिया में हमारा देश दुनिया के सर्वाधिक भ्रष्ट देशों में जाना जाने लगा है।

fjikVZ dgrh g$

भ्रष्टाचार के स्तर के कारण ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल के 'कॅरप्शन प्रीसेप्शन इंडेक्स' के नवीनतम रैंकिंग में भारत 87वें क्रम पर लुढ़क गया, क्योंकि ग्लोबल वॉच डॉग वैश्विक प्रहरी की अवधारणा के अनुसार घपलों से भरे राष्ट्रमंडल खेलों के परिप्रेक्ष्य में देश में भ्रष्टाचार बढ़ा है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के 'ट्रांसपेरेंसी करप्शन इंडेक्स' की रिपोर्ट जो 178 देशों के सार्वजनिक उपक्रमों को जांचती है, दर्शाती है कि सन् 2009 में भारत 84वें से तीन दर्जा नीचे गिरा है।

3.3 ईमानदारी प्राप्तांक (Integrity score) के साथ भ्रष्टाचार के संदर्भ में भारत अब दुनिया में 87वें क्रम पर है। पड़ोसी चीन 3.5 ईमानदारी स्कोर लेकर 78वें क्रम के साथ भारत से उपर है। सन् 2009 में वह 79वें क्रम पर था।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इण्डिया के चेयरमैन पी.एस.बाबा ने कहा कि "रैंकिंग और ईमानदारी स्कोर के साथ भारत का नीचे जाना चिंता और खेद का विषय है। ऐसा लगता है कि कुशल प्रशासकों के बावजूद भारत में शासन का स्तर सुधर नहीं रहा है।"

0 से 10 के पैमाने पर रैंकिंग अन्य कसौटियों के साथ–साथ भ्रष्टाचार की व्यापकता और प्रत्येक सरकार द्वारा भ्रष्ट गतिविधियों को रोकने और दण्डित करने की योग्यता पर आधारित होती

है।शून्य का स्कोर सर्वाधिक भ्रष्ट जबकि 10 स्कोर भ्रष्टाचार के न्यूनतम स्तर को दर्शाता है।

रिपोर्ट के मुताबिक "भारत में भ्रष्टाचार के बारे में धारणा लगता है, हाल ही में सम्पन्न हुए राष्ट्रमंडल खेलों में कथित भ्रष्टाचार के चलते मुख्य रुप से बढ़ी है।"

कम से कम चार जांच एजेंसियां – केन्द्रीय सर्तकता आयोग(सी.वी.सी), प्रर्वतन निदेशालय(एर्न्फोर्समेंट डायरेक्टोरेट), आयकर विभाग (इन्कम टैक्स डिर्पाटमेंट) और नियंत्रक एवं महालेखाकार(सी ए जी) – गत् वर्ष समाप्त हुए राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजकों के विरुध्द भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच कर रही है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा दुनिया में सर्वाधिक न्यूनतम भ्रष्टाचार वाले देशों में डेनमार्क, न्यूजीलैंड और सिंगापुर को शामिल किया गया है।

9.3 स्कोर के चलते डेनमार्क रिपोर्ट में पहले क्रम पर है जबकि न्यूजीलैण्ड और सिंगापुर समान स्कोर के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे क्रम पर है।

5.7 ईमानदारी स्कोर के साथ दक्षिण एशिया में भूटान सर्वोत्तम कार्यनिष्पादनता के चलते 37वें क्रम पर है।

यह रिपोर्ट विश्व बैंक, यूरोपीय यूनियन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और फ्रीडम हाऊस फाऊण्डेशन सहित विभिन्न अतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वर्षभर में किए गए 13 सर्वेक्षणों पर आधारित है।

राष्ट्रीय स्तर पर दृश्य वास्तव में निराशाजनक है। इसकी तुलना में हाल ही में गुजरात से मिलने वाले समाचारों पर कोई भी गर्व कर सकता है।

सन् 2003 से प्रत्येक दो वर्ष पर गुजरात Vibrant Gujarat कार्यक्रम आयोजित करता है। अब तक चार कार्यक्रम – 2003, 2005, 2007 एवं 2009 – हो चुके हैं। इस वर्ष के कार्यक्रम में 101 देशों और लगभग 1400 विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मोटे तौर पर 462 बिलियन अमेरिकी डॉलर राशि जोकि भारत के जी डी पी का एक तिहाई है, के समझौता पत्रों (एम ओ यू) पर मात्र दो दिन में हस्ताक्षर किए गए।

मई 2010 में मैंने मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आयोजित अद्वितीय स्वर्णिम गुजरात समारोह (गुजरात के स्थापना की स्वर्ण जयंती) के बारे में लिखा था। उस अवसर पर राजधानी गांधीनगर में एक नए प्रकल्प महात्मा मंदिर की घोषणा की गई थी। यह भी घोषित किया गया था कि 2011 में आयोजित Vibrant Gujarat कार्यक्रम महात्मा मंदिर में ही किया जाएगा। प्रकल्प इतना महत्वाकांक्षी था अनेकों को आशंका थी कि क्या यह इतनी जल्दी यह पूरा हो पाएगा। लेकिन इसका श्रेय नरेन्द्रभाई को देना पड़ेगा कि 34 एकड़ भूमि में इस ऐतिहासिक आश्चर्य का निर्माण 182 दिनों में पूरा कर दिखाया।

बगैर स्तम्भों वाले इस बहुउद्देश्यीय वातानुकूलित मुख्य कन्वेंशन हॉल जहां Vibrant Gujarat कार्यक्रम सम्पन्न हुआ में 500 लोग बैठ सकते हैं और आवश्यकतानुसार स्थान बढ़ाने–घटाने की काफी संभावना है। इसके अलावा निर्मित बिजनेस सेंटर में एक ही समय पर 1500 लोग बैठ सकते हैं।

गुजरात में इन उपलब्धियों के पीछे नरेन्द्रभाई द्वारा राज्य प्रशासन से प्रभावी ढंग से लेटलतीफी और भ्रष्टाचार को समाप्त करने में उनकी विस्मयकारी सफलता है। और यही सफलता भारत तथा विदेशों से उद्योगपतियों को स्वाभाविक रूप से गुजरात की ओर आकर्षित करती है। ■

कलराज मिश्र उप्र अभियान समिति के प्रमुख मनोनीत

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सांसद श्री कलराज मिश्रा को उत्तर प्रदेश में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव के लिए चुनाव अभियान समिति का प्रमुख मनोनीत किया है।

नए प्रदेश महामंत्री (संगठन) की घोषणा

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने श्री नागेन्द्र नाथ को महामंत्री (संगठन), बिहार प्रदेश एवं श्री राकेश कुमार को महामंत्री (संगठन), उत्तर प्रदेश का दायित्व सौंपा है। गौरतलब है कि इससे पूर्व श्री नाथ महामंत्री (संगठन), उत्तर प्रदेश एवं श्री कुमार सह महामंत्री (संगठन), उत्तर प्रदेश का दायित्व संभाल रहे थे।

भाजपा मीडिया प्रकोष्ठ में नई नियुक्तियां

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने केन्द्रीय मीडिया प्रकोष्ठ के सहसंयोजकों की घोषणा की है। सर्वश्री केके शर्मा, हंस भल्ला, राजीव ईस्सर व शिल्प कुमार प्रकोष्ठ के नए सह संयोजक बनाए गए हैं। विदित हो कि श्री शर्मा इससे पूर्व कमल संदेश संपादक मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रध्वज फहराना- मातृभूमि के प्रति देशप्रेम का प्रतीक

क्या उमर अब्दुल्ला सरकार के लिए देशभक्ति का महत्त्व नहीं?

& v#.k tVyh

Hkkजपा युवा मोर्चा की एकता यात्रा ने 3500 कि.मी. की दूरी तय की और यह 12 राज्यों से होकर गुजरी। यह राष्ट्रवाद का शान्तिपूर्ण प्रदर्शन था। युवा मोर्चा यह जताना चाहता था कि प्रत्येक भारतीय को भारत की एक–एक इंच भूमि पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का हक है।

जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने पूछा, ''ऐसा कश्मीर में क्यों, छत्तीसगढ़ में क्यों नहीं,'' यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है जिसका उत्तर उन्हें स्वयं देने का प्रयास करना चाहिए। किसी अन्य राज्य के मुख्यमंत्री को राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाने पर कोई आपत्ति नहीं थी। केवल उन्होंने ही आपत्ति उठाई थी। वह घाटी में एक ऐसा वातावरण पैदा करने में सफल हुए कि श्रीनगर में राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाने के प्रयास से अलगाववादी भड़क जायेंगे। इसे कश्मीरी–विरोधी कदम माना जायेगा। अतः उन्होंने यात्रा के विरूद्ध जंग छेड़ दी।

राष्ट्रीय ध्वज भारत के सम्मान और गर्व का प्रतीक है। पं. नेहरू ने संविधान सभा में कहा था,''स्वतंत्रता का ध्वज अपने लिये नहीं है अपितु यह स्वतंत्रता चाहने वाले सभी लोगों की आजादी का प्रतीक है।'' आंग्ल–भारतीय समुदाय के एक अन्य सदस्य फ्रैंक एन्थोनी ने कहा– ''जहां यह हमारे अतीत का प्रतीक है, वहां यह हमें भविष्य के लिये प्रेरणा देता है। यह ध्वज राष्ट्र के ध्वज के रूप में फहराया जाता है और प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य है और उसके लिये प्रतिष्ठा की बात है कि वह न केवल इससे प्रेम करे और इसके लिए

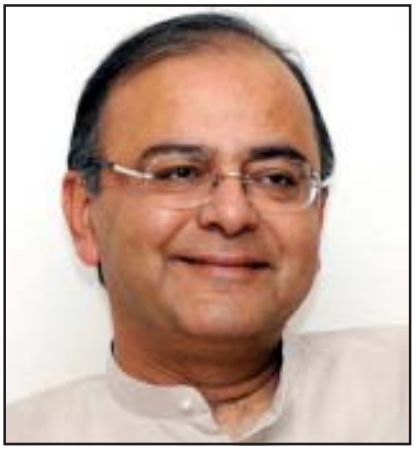

अन्तर्गत जिये अपितु यदि आवश्यक हो तो इसके लिये जान भी दे।''

उच्चतम न्यायालय ने नवीन जिन्दल, जो वर्तमान में कांग्रेस के सांसद हैं, के मामले की सुनवाई करते हुए इसे भाषण की स्वतंत्रता का अधिकार बताया जिसका आशय राष्ट्रवाद, देशभक्ति और मातृभूमि के प्रति प्रेम दर्शाना है। इन भावनाओं की अभिव्यक्ति के रूप में राष्ट्रीय ध्वज का प्रयोग एक मौलिक अधिकार है। जब तीन माह पहले नई दिल्ली के एक ऑडिटोरियम में अनेक अलगाववादियों ने भारत के अस्तित्व को नकारने के लिये बैठक की और इसे एक अप्राकृतिक राष्ट्र बताया, जो हर हाल में टूटेगा, तब उन्होंने खुले तौर पर भारतीय संघ से इसके एक भू–भाग के अलग होने की पैरवी की थी। इस राष्ट्रद्रोही कार्य को भाषण की स्वतंत्रता बताया गया था। केंद्र सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई कार्यवाही करने में अपनी असमर्थता जताई। तथापि, चिदम्बरम–उमर दोनों ने राष्ट्रद्रोही भाषणों के विरूद्ध इन्हें भाषण की स्वतंत्रता बताते हुए कार्यवाही करने में असमर्थता व्यक्त करते हुए, राष्ट्रवादी भाषण की स्वतंत्रता की कार्यवाही को उस समय रोकने का निर्णय लिया जब जम्मू–कश्मीर में राष्ट्रीय ध्वज को ले जाने की बात आई।

बहुत से लोगों ने यह प्रश्न पूछा कि राष्ट्रीय ध्वज को ले जाने पर किसी को आपत्ति क्यों होनी चाहिए? जैसे ही मैंने इसका उत्तर खोजने का प्रयास किया तो वास्तव में इसे एक षड्यंत्र पाया गया।

मैं अपने दो साथियों के साथ 24 जनवरी, 2011 को दोपहर में जम्मू पहुंचा। कुछ पुलिसकर्मी हवाई जहाज में घुस आये और स्पष्टतया दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के अन्तर्गत मुझे एक ऑर्डर दिया जिसका पाठ इस प्रकार हैः–

'जबकि यह पता चला है कि श्री अरुण जेटली भी जिले में पहुंचने वाले हैं और ऐसी सम्भावना है कि इन उच्च हस्तियों की उपस्थिति से जिले में तनाव बढ़ने के अलावा कानून और व्यवस्था की स्थिति भी पैदा हो सकती है। इसके अलावा, सुरक्षा बल कानून और व्यवस्था सम्बन्धी ड्यूटी करने और बहुत ही उच्च स्तरीय सतर्कता और निगरानी रखने में पूरी तरह व्यस्त है और कानून और व्यवस्था सम्बन्धी अतिरिक्त कार्यभार सौंपना और ऐसे उच्च हस्तियों को एल ओ पी के तहत आवश्यक सुरक्षा प्रदान करना सम्भव नहीं हो सकेगा।'

अतः हमें जिला और जम्मू–कश्मीर राज्य को छोड़कर जाने के लिये कहा गया। यह आदेश प्राप्त होने पर मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि यह गैर–कानूनी है। राज्य सरकार का आशय उतना ही सन्देहास्पद था जितना

कि इसका ग्रामर। किसी निषेधाज्ञा को जारी करने की शक्ति का प्रयोग हमें राज्य से बाहर निकालने के लिये कैसे किया जा सकता है? हर हाल में हमें जम्मू में एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करके वापस आना था। हमें हवाई अड्डे पर गैर–कानूनी रूप से 6 घंटे से अधिक समय तक रोका रखा गया। हमें हवाई अड्डे से बाहर नहीं जाने दिया गया। इस गैर–कानूनी नजरबन्दी के बाद हमें गलत बताया गया कि हमें जेल ले जाया जा रहा है जबकि वास्तव में हमें अगुवा किया गया था। हमें अलग–अलग गाड़ियों में बिठाया गया और अगले ढाई घंटे गाड़ी में घूमाते हुए आधी रात को जम्मू–कश्मीर राज्य से बाहर माधोपुर (पंजाब) में उतार दिया गया। सौभाग्यवश, पंजाब में हमारे राजनीतिक साथियों को सीमा पर हमारी उपस्थिति होने का पता चल गया और वे भारी संख्या में वहां पहुंच गये और उन्होंने हमें गाड़ियों में बिठाया और हमारे लिये रात में ठहरने की उचित व्यवस्था की।

अगले दिन दोपहर को हमारे युवा मोर्चा के अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर के साथ राष्ट्रीय ध्वज को लेकर हम राज्य में पुनः दाखिल हुए और हमें उन्ही निशेधाज्ञा के उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

राज्य सरकार द्वारा उठाये गये कदमों से अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक और संवैधानिक प्रश्न पैदा होते हैं। जम्मू डिवीजन विक्षुब्ध क्षेत्र नहीं है। वहां पर राजनीतिक रैलियां आयोजित करने की मनाही क्यों है? क्या दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 का प्रयोग भारतीय संसद में विपक्ष के दो नेताओं को राज्य से निकालने के लिये किया जा सकता है? किस के आदेश से हम दोनों को हमारे साथियों सहित जबरदस्ती उठाकर गाड़ी में डाला गया और लिखित में किसी कानूनी आदेश के बिना हमें राज्य से बाहर फेंका गया? क्या निषेधाज्ञा जारी करने के लिये दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के अधीन शक्ति का प्रयोग श्रीनगर में हाथ में राष्ट्रीय ध्वज पकड़ने के लिये किया जा सकता है, चाहे ऐसा करने वाला व्यक्ति मात्र एक राजनीतिक कार्यकर्ता क्यों न हो? इस प्रकार के सभी गैर–कानूनी कार्य किसके आदेश पर किये गये? श्रीनगर में उन सभी लोगों को, जो हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लिये लाल चौक और डलगेट पहुंचे, गिरफ्तार किया गया तथा उनसे मारपीट की गई। कुछ व्यक्तियों के अंग टूट गये। मैंने स्वयं यह बात मुख्यमंत्री और राज्य के पुलिस महानिदेशक के ध्यान में लाई।

भाजपा युवा मोर्चा के इस प्रयास ने भाजपा कार्यकर्ताओं में नया जोश भर दिया। इससे जनमत पैदा हुआ। चर्चा के राजनीतिक परिणामों के अलावा वह कौन सा सन्देश था जो चिदम्बरम्, उमर मिलकर देने का प्रयास कर रहे हैं? उन्होंने राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जम्मू सीमा पर पहुंचने से रोकने के लिये रेलगाड़ियों को हाईजैक किया। कश्मीर की बात दूर, उन्होंने राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जम्मू डिवीजन में प्रवेश करने से रोकने का प्रयास किया। उन्होंने विपक्ष के नेताओं के साथ भद्दा व्यवहार किया और उन्हें गैर–कानूनी तौर पर नजरबंद करके और बिना किसी कानूनी आदेश के वापस भेजकर उनके प्रति पूरी तरह से अभद्र व्यवहार किया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर हाथ में राष्ट्रीय ध्वज पकड़ना गिरफ्तारी और उत्पीड़न का कारण बन गया। उन्होंने ऐसा क्यों किया?

उमर अब्दुल्ला घाटी में एक सन्देश देना चाहते थे, ''मैंने भाजपा की रैली को रोका है।'' वह चाहते थे कि घाटी में उन्हें अधिक से अधिक लोग स्वीकार करें, चाहे इससे शेष देश में लोगों की राय उनके खिलाफ हो जाये। गृहमंत्री स्पष्ट रूप से दीर्घकालीन परिणामों को महसूस किये बिना इस बात के लिये राजी हो गये। उन्होंने अलगाववादियों की इच्छानुसार मनौवैज्ञानिक रूप से घुटने टेकने में उमर का साथ दिया। उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज को फहराये जाने को निषिद्ध गतिविधि में बदल दिया। यह तथ्य कि कई भाजपा कार्यकर्ताओं ने लाल चौक पहुंच कर, अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना, राष्ट्रीय ध्वज फहराया राज्य प्रशासन की अनाधिकार चेष्टा पर एक प्रहार था।

एकता यात्रा समाप्त हो गई है परन्तु राजनीतिक चर्चा जारी है। आप जम्मू–कश्मीर राज्य को शेष भारत से राजनीतिक एवं भावनात्मक रूप से किस प्रकार से जोड़ेंगे? क्या ऐसा राजनीतिक और संवैधानिक सम्बन्धों को कमजोर करके, जो 1950 में आरम्भ हुआ था, अथवा मजबूत करके होगा? अधिकांश भारत इसका उत्तर जानता है। मैं तो आशा करता हूं कि दोनों, चिदम्बरम् और उमर, इस तथ्य से इनकार करना छोड़ दें। ■

एकता यात्रा समाप्त हो गई है परन्तु राजनीतिक चर्चा जारी है। आप जम्मू–कश्मीर राज्य को शेष भारत से राजनीतिक एवं भावनात्मक रूप से किस प्रकार से जोड़ेंगे? क्या ऐसा राजनीतिक और संवैधानिक सम्बन्धों को कमजोर करके, जो 1950 में आरम्भ हुआ था, अथवा मजबूत करके होगा? अधिकांश भारत इसका उत्तर जानता है। मैं तो आशा करता हूं कि दोनों, चिदम्बरम् और उमर, इस तथ्य से इनकार करना छोड़ दें।

¼y[kd Hkktik d ofj"B urk o
jkT; lHkk e foi{k d urk g½

भ्रष्टाचार और महंगाई के मुद्दे पर जन-आंदोलन की जरूरत

✍ IR; iky

Vkज पूरा देश भ्रष्टाचार और महंगाई की मार से चीत्कार कर रहा है। कभी–कभी तो लगने लगता है कि आज देश में यूपीए की सरकार होने के बावजूद भी देश में निमित्त मात्र की भी सरकार नहीं है। लगता है कि पूरे देश का उपहास उड़ाया जा रहा है।

आज जिस देश की सरकार को भ्रष्टाचार और महंगाई पर सत्ता में रहते हुए उपाय कर जनता को राहत पहुंचानी चाहिए, वही सरकार इन विषयों पर मात्र चिंता दिखा कर मुक्त होना चाहती है। अरे भाई, चिंता करना तो विपक्ष का काम हो सकता है क्योंकि सत्ता उनके हाथ में नहीं है। यह तो कुर्सी पर बैठी सरकार को इनके बारे में उपाय ढूंढने होंगे और 'आम जनता' जिसके नाम पर आज कांग्रेस–नीत सरकार सत्ता में बैठी है, उसे राहत देनी होगी। परन्तु, लगता है कि आज कांग्रेस–नीत मनमोहन सिंह सरकार सोचती है कि अभी अगले चुनाव बहुत दूर हैं, इसलिए 'हाथ' पर 'हाथ' धरे बैठे रहो और सोनिया जी का आशीर्वाद प्राप्त करते रहो।

अभी राज्य के मुख्य सचिवों की बैठक के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का यह कहना कि भ्रष्टाचार देश की जड़ों को खोखला कर रहा है और विश्व में देश की प्रतिष्ठा धूमिल होती जा रही है, जिससे विकास पर असर पड़ रहा है, क्या देश को मुंह चिढ़ाने जैसा नहीं है? क्या कोई भी जिम्मेदार प्रधानमंत्री इस तरह कहने की बात करने की धृष्टता कर सकता है?

उधर वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी ने यह कह कर कि महंगाई दूर करने के लिए कोई जादूई छड़ी नहीं है (ठीक यही बात कभी तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने भी कही थी) और न ही मेरे पास अलाउद्दीन का चिराग है कि उसके घिसते ही महंगाई दूर हो जाएगी, क्या बदहाल जनता के जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा नहीं, बल्कि कहना होगा कि प्रणब साहब ने जानबूझ कर नमक छिड़क कर आनन्द उठाने की कोशिश की है। समझ में नहीं आता कि आप सरकार में बैठे क्यों हैं? और कुछ नहीं, जब आपके बस में कुछ भी नहीं है तो नैतिक आधार पर ही वित्त मंत्रालय से त्यागमत्र दे देते, कोई और दूसरा विभाग संभाल लेते जहां वह समझ से उस विभाग में वे अपनी कुछ न कुछ कारगुजारी दिखा कर सफल हो जाते।

आज यूपीए सरकार सत्ता में रहते हुए जनता, मीडिया, सुप्रीम कोर्ट आदि सभी से अपनी नाकामियों और निष्क्रियता से न केवल पूरे देश को बर्बाद कर रही है, बल्कि जिस कांग्रेस संगठन के अधिकार से सत्ता सुख भोग रही है, उसे भी बदनामी की अथाह पराकाष्ठा पर पहुंचा रही है। सच तो यही है कि कांग्रेस ने स्वातंत्र्योपरांत अधिकांश समय तक शासन करते हुए पूरे देश को भ्रष्टाचार में परिणत कर दिया। आप नेहरू युग से लेकर आज मनमोहन युग तक का पूरा इतिहास पढ़ जाइए, किसी भी काल में कोई भी शासन भ्रष्टाचार मुक्त नहीं रहा। दुख की बात यही है कि स्वतंत्रता के बाद पं. नेहरू का एकछत्र राज्य था, वे स्वयं भी ईमानदार थे और आज भी डॉ. मनमोहन सिंह की स्वच्छ छवि है, परन्तु अन्य प्रधानमंत्रियों की बात तो छोड़ो, इन्होंने भी उस समय टी.टी. कृष्णाचारी और आज ए. राजा जैसे दोषियों को अपनी शरण में बनाए

आज जिस देश की सरकार को भ्रष्टाचार और महंगाई पर सत्ता में रहते हुए उपाय कर जनता को राहत पहुंचानी चाहिए, वही सरकार इन विषयों पर मात्र चिंता दिखा कर मुक्त होना चाहती है। अरे भाई, चिंता करना तो विपक्ष का काम हो सकता है क्योंकि सत्ता उनके हाथ में नहीं है। यह तो कुर्सी पर बैठी सरकार को इनके बारे में उपाय ढूंढने होंगे और 'आम जनता' जिसके नाम पर आज कांग्रेस–नीत सरकार सत्ता में बैठी है, उसे राहत देनी होगी। परन्तु, लगता है कि आज कांग्रेस–नीत मनमोहन सिंह सरकार सोचती है कि अभी अगले चुनाव बहुत दूर हैं, इसलिए 'हाथ' पर 'हाथ' धरे बैठे और सोनिया जी का आशीर्वाद प्राप्त करते रहो।

रखा, अन्यथा तो नेहरू काल से ही देश भ्रष्टाचार मुक्त हो सकता था।

आज की स्थिति देखिए, 2जी स्पेक्ट्रम में श्री ए. राजा के भ्रष्टाचार और सीवीसी थामस की नियुक्ति पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार की, न जाने उसके सामने ही कितने प्रश्न खड़े कर किरकरी की है, परन्तु लगता है कि सरकार के सामने 2जी–स्पेक्ट्रम के पौने दो लाख करोड़ से अधिक की बर्बादी पर जूं रेंगने का नाम नहीं ले रही है, बल्कि यथार्थ में देखा जाए, वह अब भी ए. राजा को बचाने और सीवीसी की नियुक्ति को जायज ठहराने में लगी हुई है। अब तो इससे भी बढ़कर इसरो में एस. बैंड के मामले मा भ्रष्टाचार दो लाख करोड़ रुपये होने की संभावना बता रहा है। राष्ट्रमण्डल खेलों में 76000 हजार करोड़ से अधिक की राजस्व हानि हुई और इसकी मंजूरी देने वाले भी यही प्रधानमंत्री की सरकार रही है, फिर भी आज तक कलमाड़ी साहब मौज से सींखजों के बाहर मौज कर रहे हैं। श्री राजा को भी उसके अपराध करने के इतने वर्षों बाद गिरफ्तार किया जाना भी सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर काम करने वाली सीबीआई के लिए मजबूरी बन गया है। अभी तक भी सरकार 2जी स्पेक्ट्रम से लाभ उठाने वाली कम्पनियों के लाइसेंस रद्द नहीं कर रही है। यहां तक कि सरकार को तो इतने विशाल स्तर के भ्रष्टाचार पर भी जेपीसी का गठन करने में भी शर्म आ रही है।

महंगाई पर भी वित्तमंत्री का प्रणब मुखर्जी लोगों का मजाक उड़ाने से पीछे नहीं हट रहे हैं कि लोगों की आय बढ़ने से महंगाई बढ़ी है।'' उधर कृषि मंत्री तो कभी यह कहने में भी नहीं चूकते कि महंगाई है ही कहां!

समझ में नहीं आता कि विकास के जिन आंकड़ों के बल पर वह देश की प्रगति दिखाना चाहते हैं, क्या वह वास्तविक प्रगति है? देश की प्रगति का मतलब होता कि आम जनता की समृद्धि! परन्तु यहां तो आम आदमी के लिए दालें, सब्जियां, पेट्रोल आदि सब कुछ इतना महंगा हो गया है कि आम आदमी तो क्या, मध्यम वर्ग तक के लोग भी अछूते नहीं रह गए हैं। और सरकार है कि आंख मूंदे आराम से कुंभकरणी नींद की चैन की बंसी बजा रही है। कभी इस देश ने अंग्रेजों से स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए युगों–युगों तक संघर्ष और आंदोलनों का सहारा लिया था, आज जरूरत है कि जनता जागे और देश को बर्बाद कर रही यूपीए सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार और महंगाई से मुक्ति दिलाने के लिए आंदोलन छेड़कर भारत को सुराज के दर्शन कराए। ■

कभी इस देश ने अंग्रेजों से स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए युगों–युगों तक संघर्ष और आंदोलनों का सहारा लिया था, आज जरूरत है कि जनता जागे और देश को बर्बाद कर रही यूपीए सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार और महंगाई से मुक्ति दिलाने के लिए आंदोलन छेड़कर भारत को सुराज के दर्शन कराए।

2जी स्पेक्ट्रम घोटाला

भाजपा जेपीसी जांच मांग पर अडिग

भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा 2 फरवरी, 2011 को जारी प्रेस वक्तव्य

2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, जिसमें 1.76 लाख करोड़ रुपए की लूट हुई, उस मामले में पूर्व दूरसंचार मंत्री ए. राजा की गिरफ्तारी हो चुकी है। इस संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी तीन विषय प्रमुखता से सामने रखना चाहती है–

1. जब जांच एजेंसी को ऐसा लगा कि ए. राजा आरोपी हैं और जिसके साबित हो जाने पर उनकी गिरफ्तारी हुई है, इसके बावजूद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अब तक मौन क्यों रहे?
2. संसद का शीतकालीन सत्र बिल्कुल बर्बाद हुआ जिसकी तोहमत कांग्रेस पार्टी ने भाजपा पर लगाई जबकि सच यह है कि कांग्रेस की हठधर्मिता व अहंकार की वजह से संसद का शीत–कालीन सत्र बर्बाद हुआ।
3. हालांकि पूर्व दूरसंचार मंत्री ए राजा की गिरफ्तारी हो चुकी है, भाजपा अब भी संयुक्त संसदीय समिति की मांग पर अडिग है।

जम्मू कश्मीर के सोपोर में दो अल्पव्यस्क बहनों की हत्या आतंकियों ने की है, जो बेहद दुखद बात है। भारतीय जनता पार्टी जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री से मांग करती है कि कोई आतंकी समूह इसकी जिम्मेदारी ले, इसके इंतजार में समय गंवाये बगैर वे यथाशीघ्र उन आतंकियों को गिरफ्तार करें जिन्होंने इस जघन्य कार्य को अंजाम दिया है। ■

काला धन : राष्ट्रीय सम्पदा की लूट

✍ संजीव कुमार सिन्हा

भ्रष्टाचार देश की जड़ों को खोखला कर रहा है। भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं लेकिन काला धन इसका सबसे भयावह चेहरा है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती है। एक अंतरराष्ट्रीय संस्था 'ग्लोबल फाइनेंशियल इंटेग्रिटी' के अनुसार भारत के लोगों का लगभग 20 लाख 85 हजार करोड़ रूपए विदेशी बैंकों में जमा है। देश में काले धन की समानांतर व्यवस्था चल रही है। चूंकि इस धन पर टैक्स प्राप्त नहीं होता है इसलिए सरकार अप्रत्यक्ष कर में बढ़ोतरी करती है, जिसके चलते नागरिकों पर महंगाई समेत तमाम तरह के बोझ पड़ते हैं।

अपनी कमाई के बारे में वास्तविक विवरण न देकर तथा कर की चोरी कर जो धन अर्जित किया जाता है, वह काला धन कहा जाता है। विदेशी बैंकों में यह धन जमा करने वाले लोगों में देश के बड़े–बड़े नेता, प्रशासनिक अधिकारी और उद्योगपति शामिल हैं। विदेशी बैंकों में भारत का कितना काला धन जमा है, इस बात के अभी तक कोई अधिकारिक आंकड़े सरकार के पास मौजूद नहीं हैं लेकिन स्विटजरलैंड के स्विस बैंक में खाता खोलने के लिए न्यूनतम जमा राशि 50 करोड़ रुपये बताई जाती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जमाधन की राशि कितनी विशाल होगी। स्विस राजदूत ने माना है कि भारत से काफी पैसा स्विस बैंकों में आ रहा है। कुछ महीनों पहले स्विस बैंक एसोसिएशन ने भी यह कहा था कि गोपनीय खातों में भारत के लोगों की 1,456 अरब डॉलर की राशि जमा है।

पिछले दिनों विदेशों में जमा काले धन का मुद्दा और गर्मा गया जब स्विस बैंकर और ह्विसलब्लोअर रुडोल्फ एल्मर ने स्विस कानूनों को तोड़ते हुए स्विट्जरलैंड की बैंकों में खुले 2000 खातों की जानकारी की सीडी विकीलीक्स के संस्थापक जूलियन असांजे को दे दी। इस सीडी में स्विट्जरलैंड की बैंकों में खाता रखने वाले अमेरिका ब्रिटेन और एशिया के नेताओं और उद्योगपतियों के नाम हैं।

पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने विदेशों में जमा काले धन के मामले को जोरशोर से उठाया था और इसे चुनावी मुद्दा बनाया था। उस दौरान प्रधानमंत्री ने भी इसका समर्थन करते हुए प्रचार अभियान में वादा किया था कि सत्ता में आने के 100 दिनों के भीतर वे इस दिशा में ठोस कार्रवाई करेंगे लेकिन वह अपने वायदों से दूर भाग रहे हैं।

स्विस बैंक खातों की खास बात

स्विट्जरलैंड में बैंकों के खातों संबंधी कानून बेहद कड़े हैं और लोगों को पूरी गोपनीयता दी जाती है। इन कानूनों के तहत बैंक और बैंककर्मी किसी भी खाते की जानकारी खाताधारक के सिवा किसी और को नहीं दे सकते। यहां तक की स्विट्जरलैंड की सरकार भी इन खातों की जानकारी हासिल नहीं कर सकती। यही नहीं, स्विस बैंकों में विदेशी लोगों के लिए खाता खोलना भी बेहद आसान है। खाता खोलने की एकमात्र जरूरत सिर्फ यह है कि आपकी उम्र 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। यही नहीं खाता खोलने के लिए स्विट्जरलैंड पहुंचने की भी कोई जरूरत नहीं है, ईमेल और फैक्स पर जानकारी देकर भी खाता खुलवाया जा सकता है।

काला धन राष्ट्रीय संपति की चोरी : सर्वोच्च न्यायालय

पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय ने विदेशी बैंकों में जमा काले धन पर चिंता जताई। न्यायालय के कड़े रुख से सरकार पर दबाव बढ़ गया है। प्रख्यात वकील श्री राम जेठमालानी द्वारा दायर एक याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि विदेशों में जमा काला धन केवल टैक्स की चोरी मात्र नही है, यह गंभीर अपराध, चोरी और देश की लूट का मामला है। न्यायमूर्ति बी सुदर्शन रेड्डी और न्यायमूर्ति एसएस निज्जर वाली पीठ ने यह कड़ी टिप्पणी की।

काले धन पर यूपीए सरकार के ढुलमुल रवैये से यह स्पष्ट हो गया है कि सरकार भ्रष्टाचारियों के साथ है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 30 जुलाई 2009 को राज्यसभा में बताया था कि विदेशी बैंकों से काले धन को वापस देश में लाने के लिए सरकार कदम उठा चुकी है। प्रधानमंत्री की यह टिप्पणी सदन में वित्त विधेयक पर वित्त मंत्री के बयान पर खुद दी गई थी। प्रधानमंत्री ने देश को आश्वस्त किया था कि स्विस बैंकों में जमा एक लाख करोड़ रुपये के भारतीय काले धन को सत्ता संभालने के 100 दिन में वापस देश में ले आएंगे। वहीं दूसरी ओर, विदेशी बैंकों में जमा काले धन के बारे में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कड़ा रुख अपनाए जाने के बीच प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि काले धन को तुरंत वापस लाना आसान नहीं है और इस संबंध में मिली जानकारी को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता।

काले धन से देश की सुरक्षा को खतरा

काले धन का इस्तेमाल आतंकवाद को बढ़ावा देने में किया जा रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने भी इस ओर इशारा किया है कि विदेशों में जमा काला धन ही आतंकियों को वित्तीय मदद के रूप में भारत में आता है।

प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह और राहुल गांधी का गैरजिम्मेदाराना बयान

काले धन पर यूपीए सरकार के ढुलमुल रवैये से यह स्पष्ट हो गया है कि सरकार भ्रष्टाचारियों के साथ है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 30 जुलाई 2009 को राज्यसभा में बताया था कि विदेशी बैंकों से काले धन को वापस देश में लाने के लिए सरकार कदम उठा चुकी है। प्रधानमंत्री की यह टिप्पणी सदन में वित्त विधेयक पर वित्त मंत्री के बयान पर खुद दी गई थी। प्रधानमंत्री ने देश को आश्वस्त किया था कि स्विस बैंकों में जमा एक लाख करोड़ रुपये के भारतीय काले धन को सत्ता संभालने के 100 दिन में वापस देश में ले आएंगे।

वहीं दूसरी ओर, विदेशी बैंकों में जमा काले धन के बारे में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कड़ा रुख अपनाए जाने पर प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि काले धन को तुरंत वापस लाना आसान नहीं है और इस संबंध में मिली जानकारी को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। मंत्रिमंडल में फेरबदल के बाद राष्ट्रपति भवन में संवाददाताओं से बातचीत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने काले धन के बारे में क्या टिप्पणी की है, इसकी उन्हें जानकारी नहीं है, लेकिन काले धन की समस्या का कोई तुरंत हल नहीं है। इस संबंध में विभिन्न देशों से जो जानकारी मिली है उसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय संधि के विपरीत होगा। उन्होंने कहा कि सरकार को मिली जानकारी का इस्तेमाल सिर्फ कर वसूली के लिए है। अन्य कार्यों के लिए इसका उपयोग नहीं हो सकता।

जहां प्रधानमंत्री विदेशी बैंकों में भारतीय खाताधारकों के नाम बताने से इनकार कर रहे हैं वहीं कांग्रेस महासचिव श्री राहुल गांधी कह रहे हैं कि काला धन रखने वालों पर मामला दर्ज होना चाहिए। यह बयान केवल एक मजाक है, क्योंकि उन्हें बयान जारी करने की बजाए ठोस पहल प्रारंभ करनी चाहिए।

विदित हो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र ने संकल्प पारित किया है। जिसका उद्देश्य है, गैरकानूनी तरीके से विदेशों में जमा धन वापस लिया जा सके। इस संकल्प पर भारत सहित 140 देशों ने हस्ताक्षर किए और 126 देशों ने इसे लागू कर काले धन की वापसी की कार्रवाई भी शुरू कर दी है।

काले धन पर रोक लगाने में कई अड़चनें हैं। अभी तक विदेशी बैंकों में जमा काले धन को भारत वापस लाने के लिए हमारे पास ठोस कानून नहीं है। इसलिए इस दिशा में ठोस कानून बनाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही काले धन के मुद्दे पर राष्ट्रीय आम सहमति बनाने का प्रयास हो तथा विदेशों में भारतीय नागरिकों द्वारा जमा किए गए काले धन को वापस लाने के लिए सरकार प्रबल इच्छाशक्ति का परिचय दे।

काले धन की वापसी से भारत की अर्थव्यवस्था का कायापलट हो सकता है। अगर ये काला धन देश की अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ दिया जाए तो स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, बिजली आदि बुनियादी आवश्यकताओं को सहज ही पूरा किया जा सकता है। ■

महिला कार्यकर्ताओं की दक्षता हेतु प्रशिक्षण शिविर आयोजित

Hkkरतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का उदघाट्न भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने 28 जनवरी 2011 को दिल्ली के समीप झिंझोली में किया। इस उद्घाटन समारोह में स्मृति ईरानी (अध्यक्षा– भा.ज.पा. महिला मोर्चा), नजमा हेपतुल्ला जी (उपाध्यक्षा–भा.ज.पा.), आनंदीबहन पटेल, मायासिंह, गीताजी, अर्चना चिटनीस तथा अन्य अतिथिगण मौजूद थे।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि भारत में भारतीय जनता पार्टी ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जहाँ लोग 50 वर्षों से एक साथ पूरे लोकतांत्रिक ढंग से काम कर रहे हैं। इस देश में विकास न होने की सबसे बड़ी वजह धन की कमी का होना है।

भारतीय जनता पार्टी का कहना है कि हमारे देश का जितना भी काला धन विदेशी बैंकों में जमा है उसको वापिस भारत में लाना चाहिए। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'ग्लोबल फायनेंस' के अनुसार भारत के लोगों का लगभग 20 लाख 85 हजार करोड़ रूपये विदेशी बैंकों में जमा हैं जिसे भारत में तुरंत वापस लाना चाहिए। हम सबको मिलकर राष्ट्रवाद व सुशासन की दिशा में काम करना चाहिए। अखिल भारतीय जनता पार्टी की महिला मोर्चा इस काम को बखूबी कर सकती है।

भाजपा कार्यकर्ताओं में देशभक्ति, ईमानदारी, कर्मठता इत्यादि गुणों का और अधिक विकास हो इस उद्देश्य से राष्ट्रीय एवं प्रांतीय भाजपा महिला कार्यकर्ताओं का यह प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया गया है। यह वर्ग झिंझौली स्थित साधना स्थली में 28, 29 व 30 जनवरी को संपन्न हुआ।

इस वर्ग में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय भाजपा महिला कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस वर्ग के पश्चात् देशभर के सभी प्रांत, जिलों व मण्डल स्तर तक इस तरह के वर्ग आयोजित किये जायेंगे।

पार्टी अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने प्रशिक्षण पर बल दिया है। देशभर में इसी तरह अनेक प्रशिक्षण शिविरों में 20000 से अधिक भाजपा कार्यकर्ता प्रशिक्षण ले रहें हैं। Nation First का भाव मजबूत बने तथा उनमें सेवाभाव बढ़े यही इन वर्गों का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

वर्ग के दौरान महिला कार्यकर्ताओं को जनता का अच्छा प्रतिनिधि बनने तथा निष्ठा, ईमानदारी के साथ समाज के बीच काम करने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त शिविर में महिला कार्यकर्ताओं की क्षमताओं का विकास तथा देश के महत्वपूर्ण विषयों के प्रति उन्हें और जागरूक करने पर बल दिया गया। कार्यकर्ताओं में बोलने की कला का विकास हो, उनमें टीम वर्क बढ़े और अच्छे गुणों के विकास हो इस पर विशेष ध्यान दिया गया।

कार्यकर्ताओं ने देशभर में मंहगाई के खिलाफ खूब काम किया है एवं वर्तमान सरकार पर भी भरपूर दबाव बनाया है। भाजपा के सभी कार्यकर्ता आतंकवाद, नक्सलवाद एवं जनहित के अनेक विषयों पर सक्रिय हुए हैं।

देश के विकास में अगर लाखों लोग उत्साह एवं कर्मठता से लग जाएँ तो भारत का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल होगा इस दिशा में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एक अच्छा कदम है। ■

भाजयुमो ने किया राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में प्रतिवेदन दाखिल

Hkkरतीय जनता युवा मोर्चा ने जम्मू एवं कश्मीर में 26 जनवरी को पुलिस द्वारा मोर्चा कार्यकर्ताओं को अमानवीय यातना देने एवं अवैध हिरासत में लेने की जांच हेतु 7 फरवरी 2011 को मानवाधिकार आयोग के समक्ष प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

विगत 12 से 26 जनवरी के बीच युवा मोर्चा द्वारा राष्ट्रीय एकता यात्रा एवं सद्भाव का संदेश लेकर कोलकाता से श्रीनगर की यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा 57 शहरों एवं 12 राज्यों से 3037 किमी. तक शान्तिपूर्वक तरीके से निकाली गयी। इस यात्रा में काफी बड़ी संख्या में युवा भारतवासियों ने भाग लिया।

इस यात्रा में 26 जनवरी को निम्नलिखित युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं को जम्मू कश्मीर पुलिस द्वारा अवैध रूप से हिरासत में लेकर 'थर्ड डिग्री' की यातनएं दी गई। जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा निम्नलिखित कार्यकर्ताओं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया। श्री भ्रगुबक्षीपात्रा, श्री राजेश चौधरी, श्री मोहन रेड्डी, श्री सुरेश भधासिया, श्री सान्तन बसु, श्री मृगंग बर्मन, श्री आर.पी. सिंह, श्रीमती शिखा राय, श्री प्रदीप सिंह वाघेला, श्री हर्ष सांघवी, श्री अल्पेश, श्री पाण्डया शशिकान्त, श्री जीगर खेड़ा, श्री भीमजी जौदानी, श्री मोमायो गाधवी, श्री मौसम पटाटे, श्री अजीतराम वानी, श्री हमीर चावड़ा, श्री विजय जाडेजा, श्री जितेन्द्र मीणा, श्री विरेन्द्र एस. खिंची, श्री लोकेन्द्र सिंह राजावत, श्री विजय उपाध्याय, श्री विनोद रावत, भुपेन्द्र चौधरी, श्री अशोक भाटी, श्री हिरेन मिश्रा, श्री जितेन्द्र कुमार गुप्ता, श्री के.के. उपाध्याय, श्रीमती हालीमा.

~~~~~~~~~~~~◉◉◉~~~~~~~~~~~~

प्रतिवेदन में मानवाधिकार आयोग को लिखितरूप में शिकायत की गई है कि जम्मू कश्मीर पुलिस द्वारा कार्यकर्ताओं के हाथ एवं पैरों को तोड़ा गया, उन्हें गालियां दी गई। दल की महिला कार्यकर्ताओं को सबके सामने थप्पड़ मारा गया। इस सारी प्रक्रिया में संवैधानिक एवं कानूनी उपबंधों की पूरी तरह अवमानना की गयी।

~~~~~~~~~~~~◉◉◉~~~~~~~~~~~~

प्रतिवेदन में मानवाधिकार आयोग को लिखितरूप में शिकायत की गई है कि जम्मू कश्मीर पुलिस द्वारा कार्यकर्ताओं के हाथ एवं पैरों को तोड़ा गया, उन्हें गालियां दी गई। दल की महिला कार्यकर्ताओं को सबके सामने थप्पड़ मारा गया। इस सारी प्रक्रिया में संवैधानिक एवं कानूनी उपबंधों की पूरी तरह अवमानना की गयी।

युवा मोर्चा ने अपने प्रतिवेदन में मानवाधिकार आयोग को निवेदन किया है कि :–

क) इस सारे प्रकरण की तत्काल जांच करायी जाय, और दोषी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ तत्काल कानूनी कार्यवाही की जाय।

ख) दोषी प्रतिवादियों के खिलाफ मानव अधिकार हनन की कार्यवाही प्रारंभ की जाय, और कानून के अनुसार उचित दण्ड दिया जाय।

ग) जम्मू कश्मीर सरकार से उन कारणों का जवाब मांगा जाय, जिस कारण से उन्होंने भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं से क्रूरतापूर्वक, अमानवीयता, निरसंस्ता का व्यवहार कर थर्ड डिग्री व्यवहार किया गया।

घ) जम्मू कश्मीर सरकार एवं पुलिस की जवाबदेही तय की जाय।

ड़) जम्मू कश्मीर सरकार एवं पुलिस के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किये गए कार्यकर्ताओं की क्षतिपूर्ति की जाए।

भारतीय जनता युवा मोर्चा की आशा है कि इस जांच से 26 जनवरी, 2011 के श्रीनगर में हुई घटना की सच्चाई सामने लायी जाएगी व दोषी लोगों की जवाबदेही तय की जाए।

इस प्रतिनिधि मण्डल में युवा मोर्चा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर (सांसद), भाजपा राष्ट्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव (अधिवक्ता), भाजपा राष्ट्रीय मंत्री श्री नवजोत सिंह सिद्धू (सांसद), राष्ट्रीय मंत्री सुश्री वाणी त्रिपाठी, श्री टी.एन. राजदान (अधिवक्ता), युवा मोर्चा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राजेश यादव उपस्थित थे। ■

'अन्त्योदय' की भावना का अनुसरण करने का संकल्प

Hkkजपा व राजग शासित नौ राज्यों के अनुसूचित जाति मंत्रियों और अन्य सामाजिक न्याय विभाग संभालने वाले अन्य मंत्रियों की एक बैठक संसद भवन अनैक्सी, नई दिल्ली में 3 फरवरी 2011 को हुई। यह बैठक मुम्बई में जून 2010 को आयोजित 'सुशासन' पर राष्ट्रीय कंवेंशन में पारित एजेण्डे के क्रम में आयोजित हुई।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने बैठक का उद्घाटन करते हुए मंत्रियों से अपने–अपने राज्यों में दलितों एवं जरूरतमंद वर्गों के लाभ के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को कारगर तथा त्वरित गति से कार्यान्वयन करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वे अपने–अपने विभागों और मंत्रालयों में भ्रष्टाचार–मुक्त प्रशासन देने की शुरूआत करें।

'अन्त्योदय' की भावना पर बल देते हुए श्री गडकरी ने उनसे कहा कि उन्हें कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति पर ध्यान रखते हुए अपनी नीतियां तैयार करनी चाहिए और समाज के सर्वाधिक निर्बल वर्गों तक अपने लक्ष्य को पहुंचाना चाहिए।

बैठक को लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा–शासित राज्यों में अनुसूचित जाति के प्रमुख पोर्टफोलियों हैं जिससे पता चलता है कि पार्टी इनकी क्षमता और प्रतिभा में बिना किसी जाति की पृष्ठभूमि के बेहतर शासन में विश्वास रखती है। उन्होंने कहा कि वे समग्र रूप से समाजसेवा के अवसरों का उपयोग करें और अपने समुदाय के सदस्यों को, विशेष रूप से इन वर्गों के पुनरूद्धार की जिम्मेदारी लें।

सभी मंत्रियों ने अपने–अपने राज्यों में कार्यान्वित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और उनकी प्रगति को बैठक में रखा। उन्होंने कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार की पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण को भी सामने रखा क्योंकि केन्द्र सरकार भाजपा–शासित राज्यों को लगभग वित्त वर्ष की समाप्ति पर ही धनराशि देती है जिसके परिणामस्वरूप उनके लिए समय पर सम्पूर्ण धनराशि का उपयोग करना मुश्किल हो जाता है।

सभी भागीदारों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि यदि रंगनाथ मिश्रा आयोग की रिपोर्ट को केन्द्र सरकार स्वीकार कर लेती है तो इससे अनुसूचित जातियों की विकास संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्होंने रंगनाथ मिश्रा आयोग की रिपोर्ट के खिलाफ अपना विरोध जारी रखने का निर्णय लिया, क्योंकि इस रिपोर्ट में दलित ईसाई और मुस्लिम वर्ग के अनुसूचित जातियों को शामिल करने की सिफारिश की गई है।

बैठक को भाजपा महासचिव श्री थावरचन्द गहलोत और गुजरात सरकार के सामाजिक न्याय मंत्री श्री फकीरभाई वाघेला एवं बैठक के संयोजक ने सम्बोधित किया, जिसकी अध्यक्षता श्री दुष्यंत कुमार गौतम ने की और भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रामनाथ कोविंद ने संयोजन किया। ■

केवल भाजपा ही सक्षम विकल्प दे सकती है : राजनाथ सिंह

&l;oknnkrk }kjk

Hkkजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 30 जनवरी 2011 को पन्द्रह दिवसीय नव जागरण रथ यात्रा को पश्चिम बंगाल के कच्छ बिहार जिले से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा पश्चिम बंगाल के बहुत से जिलों से होकर गुजरेगी जिसका समापन कोलकाता के रानी राजमोनी रोड पर 15 फरवरी को होगा।

भाजपा द्वारा की जा रही इस यात्रा का उद्देश्य राज्य की बदहाल कानून व्यवस्था, बढ़ती कीमतें, सत्तारूढ़ वाममोर्चा तथा विपक्ष तृणमूल कांग्रेस की अयोग्यता को प्रकाश में लाना है। नवजागरण यात्रा को हरी झण्डी दिखाते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि राज्य की जनता एक विकासक्षम विकल्प की तलाश में है, क्योंकि माकपा एक अयोग्य और नकारा सरकार सिद्ध हुई है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि ऐसी अयोग्य सरकार को जनता उखाड़ फेंके। उन्होंने मतदाताओं से आह्वान किया कि वे भाजपा को भरपूर समर्थन दे।

लोगों को सम्बोधित करते हुए पार्टी के पश्चिम बंगाल के प्रभारी श्री चंदन मित्रा ने कहा कि केवल भाजपा ही भाकपा (मा) के इस जंगलराज से छुटकारा दिला सकती है और राज्य का समुचित विकास कर सकती है। पूरे देश ने देखा कि राजग के कार्यकाल में बड़ी संख्या में विकास के कार्य हुए और वह सरकार ने नया कीर्तिमान स्थापित किया।

उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल की आज भारत के गरीब राज्यों में गिनती की जाती है। इसके लिए जितनी कांग्रेस दोषी है उतनी ही तृणमूल कांग्रेस भी। वामपंथी सरकार ने 34 वर्षों में राज्य को बुरी तरह प्रभावित किया है। आज भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा है। बंगाल सरकार ने धर्म के आधार पर मुस्लिमों को आरक्षण दिया है। हम इस तरह साम्प्रदायिक आधार पर दिए गए आरक्षण का विरोध करते हैं और इस तरह के वोटबैंक की राजनीति करने वालों का पर्दाफाश करेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि केवल भाजपा ही एक सक्षम विकल्प दे सकती है क्योंकि यह विकास के मामले में जहां भी है वह कीर्तिमान स्थापित किया है। यह बात उन्होंने सड़क के दोनों ओर उमड़ी लोगों की भीड़ में कही। ■

यूपीए सरकार ने भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों को शह देकर अर्थव्यवस्था बर्बाद कर दी

कांग्रेस नीत यूपीए सरकार की नीतियों ने इस देश की अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व संकट में डाल दिया है। समाज के गरीब और कमजोर वर्ग को निराश एवं संकट की स्थिति में अपना जीवन निर्वाह करना पड़ रहा है। यहां तक कि जो लोग उच्च आय वर्ग में आते हैं, वे भी बढ़ी कीमतों और अपार मुद्रास्फीति से आहत महसूस कर रहे हैं। वर्तमान केन्द्र सरकार पूरी तरह से बेखबर है और आर्थिक कुप्रबंध के कारण मुद्रा स्फीति की आकाश छूती नजर आ रही है।

मुद्रास्फीति के साथ भ्रष्टाचार ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी है। इन मुद्दों पर सरकार बुरी तरह से विफल है। ट्रांस्पेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे अधिक भ्रष्ट है।

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह द्वारा कोजीकोड़ में 29 जनवरी को जारी प्रेस व्यक्तव्य

पिछले वर्ष हमने एक के बाद एक घोटाले होते देखा परन्तु यूपीए सरकार भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाने को तैयार ही नहीं है। सरकार द्वारा 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले में जेपीसी गठित करने की इंकारी के कारण संसद का पूरा का पूरा सत्र ही समाप्त होकर रह गया।

हम अब भी जेपीसी की मांग पर अडिग और सरकार आने वाले बजट सत्र को भी खतरे में डालती दिखाई पड़ रही है। यह सरकार का दायित्व है कि वह संसद को सुचारू ढंग से चलने दे। अतः उसे 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन मामले में संसद सत्र से पूर्व जेपीसी जांच शुरू करनी चाहिए। सरकार को यह गलतफहमी है कि विपक्षी पार्टियां चुनाव के लिए तैयार नहीं हैं। यदि ऐसी स्थिति पैदा हुई तो भाजपा मध्यकालीन चुनाव के लिए तैयार है।

सरकार को समझ लेना चाहिए कि भ्रष्टाचार न केवल हमारी अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है बल्कि उसे भारत की प्रतिष्ठा भी खतरे में पड़ जाती है। यूपीए सरकार का शुरू से ही ऐसा रिकार्ड रहा है वह भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों पर उसका इतिहास संदिग्ध, प्रश्नचिह्न एवं निराशाजनक रहा है। पामोलीन घोटाले के आरोपी श्री पीजे थामस को सीवीसी नियुक्त किया जाना इसका एक उदाहरण है।

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती

सुषमा स्वराज ने उनकी सीवीसी के रूप में नियुक्ति पर चयनसमिति में आपत्ति भी की, परन्तु सरकार ने इसे खारिज करते हुए उन्हें इस पद पर नियुक्त कर दिया। उसने तो सुप्रीम कोर्ट तक में हलफनामा देकर थामस को पक्का ईमानदार बता कर बचाव किया। देश के सभ्य समाज और न्यायपालिका की आलोचना के बावजूद भी सरकार ने अभी तक उन्हें इस पद से हटाया नहीं है।

भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के लिए पूरी ईमानदारी और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। भाजपा तुरन्त ही थामस को इस पद से हटाने की मांग करती है जिसके लिए सीवीसी अधिनियम के नियम 6(3) (ई) का सहारा लिया जा सकता है जिसमें कहा गया है भारत के राष्ट्रपति सीवीसी के किसी अनुचित कार्य के लिए उन्हें पद से हटा सकते हैं।

जीएफआई द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार भारत का काला धन पूरे संयुक्त विश्व की तुलना में कहीं अधिक है। भारत का लगभग 22.5 लाख करोड़ रूपए का काला धन स्विस बैंकों तथा अन्य टैक्स–हेवन वाले देशों में जमा है। यह राशि देश की कुल जीडीपी का लगभग आधा है और हमारे कुल विदेशी ऋण का लगभग 13–14 गुणा है। आज जब सरकार भारी वित्तीय घाटे की बीमारी से ग्रस्त, ऐसे में काले धन को वापस लाकर देश की अर्थव्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

सरकार ने यह भी कई अवसरों पर माना है और वायदा भी किया है कि वह भारत में काले धन को वापस लाएगी। दुर्भाग्य से इस दिशा में उसने अभी तक कुछ भी गम्भीरता से नहीं किया। सरकार अन्तर्राष्ट्रीय संधियों और विधिगत दायित्वों की आड़ में स्विस बैंकों के खातेधारियों का बचाव करती आ रही है। सुप्रीम कोर्ट ने देश की लूट में शामिल ऐसे खातेधारियों के नाम बताने को कहा है, परन्तु सरकार इनका नाम बताने में हिचकिचा रही है।

अमरीका और जर्मनी जैसे देशों ने ठोस उपाए कर अपने काले धन को वापस लाने में सफलता प्राप्त की है जिसके लिए उन्होंने अपने वर्तमान कानूनों में सुधार भी किया है। यूएन ने भ्रष्टाचार पर कंवेंशन पारित की है। और अब ऐसे नियम बनाए जा रहे हैं जिनसे पैसे देश में वापस आ सकें। प्रश्न यह है कि यूपीए सरकार को इसी प्रकार के आधार पर काम करने से कौन रोक रहा है।

यूपीए सरकार जानबूझ कर काला धन वापसी पर विलम्ब कर रही है और प्रक्रिया को परिवर्तित कर रही है क्योंकि उसे भय है कि इस मुद्दे पर जल्दी कदम उठाए तो कांग्रेस पार्टी के ऊंचे पदों पर बैठे व्यक्तियों के सम्बंधों का पर्दाफाश हो जाएगा।

भाजपा का मानना है कि स्विस बैंकों में जमा काला धन अवैध तथा भ्रष्ट साधनों से पैदा हुआ है इसलिए सरकार को इसकी वापसी के लिए वैधानिक ढांचा गठित कर ईमानदारी से प्रयास करना चाहिए।

एलडीएफ-यूडीएफ की सरकार से केरल के लोग हताश

वर्तमान एलडीएफ–यूडीएफ के शासन में केरल का विकास और समृद्धि अवरूद्ध हो गया है। हाल के वर्षों में बेरोजगारी कई गुणा बढ़ी है।

इससे पूर्व केरल के लोग खाड़ी देशों में रोजगार पाते थे परन्तु मंदी के बाद से राज्य में मनीआर्डर इकानामी का आना बंद सा हो गया है। रोजगार के अवसरों की कमी के कारण केरल के लोगों को पड़ोसी देशों में जाना पड़ रहा है। राज्य सरकार की अकुशलता एवं संवेदनहीनता सबरीमाला मंदिर की त्रासदी से स्पष्ट दिखाई पड़ती है जहां एक भगदड में मारे गए जिसने यह सिद्ध कर दिया कि सरकार को श्रद्धालुओं की सुरक्षा और संरक्षण की जरा परवाह नहीं है। केरल के लोग श्री वी.एस अच्युतानंदन के नेतृत्व में चल रही एलडीएफ सरकार ने बेहद कुंठित है। उन्होंने कांग्रेस की यूडीएफ का शासन भी देखा है जो अत्यंत निराशाजनक रहा। वे अब निराश होकर तीसरे विकल्प की ओर निहार रहे हैं। मुझे खुशी है कि केरल भाजपा ने शैंअम ज्ञमतसं च्कलंजतंश की शुरूआत कर राज्य के लोगों की बदहाली दिखाने का निर्णय लिया है।

मुझे पक्का विश्वास है कि इस वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों में लोगों को राज्य सरकार को सबक सिखाने का अवसर मिलेगा।

प्रिय पाठकगण

कमल संदेश (पाक्षिक) का अंक आपको नियमित मिल रहा होगा। यदि किन्हीं कारणवश आपको अंक प्राप्त न हो रहा हो तो आप अपने प्रदेश कार्यालय को या हमें अवश्य सूचित करें।

-सम्पादक

बेलगाम भ्रष्टाचार ने कांग्रेस का जनविरोधी चेहरा उजागार कर दिया है : नितिन गडकरी

Hkkजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने पटना में एक बड़ी रैली को 5 फरवरी 2011 को सम्बोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार तेजी से बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने में पूरी तरह असफल है। इसलिए इस तरह अयोग्य, अक्षम, भ्रष्ट सरकार को सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है। अगले संसदीय चुनाव में राजग ही एकमात्र विकल्प है। यह सभा भाजपा के कार्यकर्ताओं को सम्मानित करने के लिए आयोजित की गयी थी। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में राजग गठबंधन ने राज्य में एक बड़ी जीत हासिल की है। इस जीत में कार्यकर्ताओं की अहम भूमिका रही है। इसलिए कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कॉमनवेल्थ खेल घोटाला, 2जी घोटाला आदि के लिए कांग्रेस को दोषी ठहराते हुए श्री नितिन गडकरी ने कहा कि इन घोटालों में जितने पैसे राष्ट्र ने गवाएं हैं उतने धन में ग्रामीण भारत का चेहरा ही बदल जाता।

उन्हें प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की आलोचना करते हुए कहा कि मनमोहन सिंह उन लोगों के नाम का खुलासा करने से भाग रहे हैं जिनका कालाधन विदेशों में जमा है। यदि उस पूरे काले धन को भारत लाया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति के पास 2.34 लाख हो जाएगा। कांग्रेस नेतृत्व ऐसा करने का कोई प्रयास नहीं कर रहा है।

श्री गडकरी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस राजद बिहार में वर्षों तक लूटने में सहयोग करती रही। उन्होंने कहा कि लालू के 15 वर्षों के जंगल राज को समाप्त कर राजग को सत्ता में लाकर जनता ने सही जवाब दिया है।

रैली को सम्बोधित करते हुए राज्य सभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने कहा कि 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला अब तक का सबसे बड़ा घोटाला है और इसने कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार का असली चेहरा बेनकाब कर दिया है। उन्होंने कहा कि एक के बाद एक हो रहे घोटालों से लगता है कि जल्द ही लोकसभा का चुनाव होगा। ■

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

यूपीए ने देश को आर्थिक संकट की ओर धकेला

Xत 5 फरवरी 2011 को करीब दो लाख लोग कानपुर के फूलबाग मैदान में इकट्ठा हुए। यह हुजूम भाजपा द्वारा आयोजित भ्रष्टाचार और महंगाई के विरूद्ध देशभर में हो रहे महासंग्राम रैली में हिस्सा लेने हेतु उमड़ा था। भाजपा ने इस रैली का आयोजन कांग्रेसनीत यूपीए शासन में हो रहे भ्रष्टाचार और बेलगाम महंगाई को रोकने के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए किया था। कानपुर की इस रैली में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कलराज मिश्र, श्रीमती करूणा शुक्ला, श्री मुख्तार अब्बास नकवी, उत्तर प्रदेश के प्रभारी और लोकसभा सदस्य श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री सूर्यप्रताप शाही, राष्ट्रीय सचिव श्री संतोष गंगवार, उत्तर प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष श्री केसरीनाथ त्रिपाठी उपस्थित थे। रैली को सम्बोधित करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि जब–जब कांग्रेस सत्ता में आती हैं महंगाई लाती है।

उन्होंने कहा कि भाजपा 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में जेपीसी की मांग के प्रति प्रतिबद्ध हैं। जब तक यह मांग नहीं मानी जाती तब तक संसद के बजट सत्र संचालन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

संप्रग की नीति राष्ट्र को एक भारी आर्थिक संकट की ओर धकेल रही है। इसकी नीति ने गरीबों और कमजोर तबके को नरक की जिंदगी जीने के लिए बाध्य किया है। उन्होंने मायावती सरकार की राज्य में हुई दुर्व्यवस्था के लिए घोर आलोचना की।

रैली में बोलते हुए भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नकवी ने कहा कि केवल एक राजा ही नहीं कितने महाराजा और महारानी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। आज देश में युवा बेरोजगारी की मार झेल रहा है और सरकार की नीति बिलकुल आम लोगों के विरूद्ध है।

सभा को संबोधित करते हुए राज्य के पार्टी प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि राज्य में विधायक, सांसद बलात्कार और पैसा उगाही में लगे हुए हैं। चारों तरफ आतंक का शासन है। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा ही शांति और विकास के लिए अनिवार्य हो गयी है।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कलराज मिश्रा ने अपने भाषण में संप्रग की असफलताओं और भ्रष्टाचार पर चर्चा की। ■

केन्द्र के पक्षपात ने मजबूर किया संघर्ष के लिये

मुख्यमंत्री 13 फरवरी से करेंगे उपवास और धरना

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा है कि केन्द्र सरकार के किसान विरोधी रूख और प्रदेश के साथ निरन्तर किये जा रहे पक्षपात के विरूद्ध उनके द्वारा आगामी 13 फरवरी से किया जाने वाला उपवास और धरना तार्किक परिणति पर पहुँचने तक जारी रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह आंदोलन प्रतीकात्मक न होकर मांगों की पूर्ति तक चलेगा। श्री चौहान ने कहा कि उनके संघर्ष के दौरान जनता को कोई असुविधा नहीं होने दी जायेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान अपने निवास पर केन्द्र के खिलाफ अपने संघर्ष के प्रति समर्थन व्यक्त करने आये प्रदेश भाजपा और जिला भाजपा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सम्बोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में वरिष्ठ भाजपा नेताओं पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा, पूर्व सांसद श्री नारायण प्रसाद गुप्ता ''नानाजी'', भाजपा विधायक दल के स्थायी सचिव श्री गौरीशंकर शंकर कौशल ने केन्द्र के विरूद्ध संघर्ष के लिये मुख्यमंत्री श्री चौहान को पुष्प–गुच्छ भेंटकर आशीर्वाद प्रदान किया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि निर्णय लेने के पूर्व उन्होंने पूरी कोशिश की कि केन्द्र सरकार प्रदेश के प्रति अपने रवैये में परिवर्तन लायें। इस उद्देश्य से वे प्रधानमंत्री से लेकर संबंधित केन्द्रीय मंत्रियों को अनेक बार पत्र लिखकर अनुरोध कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि न केवल पत्र लिखे गये बल्कि व्यक्तिगत रूप से भेंट कर प्रदेश के साथ हो रहे पक्षपात को रोकने और जायज मांगों की पूर्ति के उनके प्रयासों का आज तक कोई परिणाम सामने नहीं आया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके सब्र की अब इंतहा हो गई है। उन्होंने कहा कि सब जानते हैं कि प्रदेश में हालिया

शीत लहर से किसानों की फसलें लगभग चौपट हो गई हैं। केन्द्र सरकार और प्रधानमंत्री से अनुरोध करने पर भी लगभग तीन सप्ताह बीतने तक फसल नुकसान का आकलन करने के लिये आज तक केन्द्रीय अध्ययन दल नहीं आया है। उन्होंने सवाल किया कि जब आकलन ही नहीं किया जायेगा तो राहत में मदद कैसे करेगा केन्द्र ? श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश के किसानों के प्रति केन्द्र की यह बेरूखी नयी नहीं है। वर्ष 2007–08 में भी केन्द्र ने प्रदेश के सूखा प्रभावित किसानों के लिये कोई मदद नहीं दी थी। उन्होंने कहा कि उस वर्ष राज्य सरकार ने अपने संसाधनों से प्रदेश के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में राहत और रोजगार पर 400 करोड़ से ज्यादा खर्च किये थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने केन्द्र सरकार से राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में सुधार कर फसल नुकसान के लिये पंचायत और गाँव की जगह किसान के खेत को इकाई मानने, सफलों का लाभकारी मूल्य देने की नीति लागू करने, पाला प्रभावित किसानों के राष्ट्रीय.त बैंकों के ऋण स्थगित करने और अगले वर्ष का ब्याज माफ करने तथा प्रभावित किसानों को समुचित राहत देने के लिये पैकेज देने की मांग की है। श्री चौहान ने कहा कि इन मांगों की पूर्ति तक केन्द्र के विरूद्ध उनका संघर्ष जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि केन्द्र का पक्षपात केवल किसानों को राहत देने तक सीमित नहीं है। उन्होंने कहा कि इंदिरा आवास कुटीरों के नाममात्र के आवंटन, प्रदेश के ताप विद्युत गृहों के लिये कोयले की अपर्याप्त आपूर्ति, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में इस वर्ष एक भी सड़क स्वीकृत नहीं करने, प्रदेश को केन्द्र द्वारा आवंटित विद्युत की मात्रा में 350 मेगावॉट की कटौती, बी.पी.एल.परिवारों की वास्तविक संख्या के मान से प्रदेश को खाद्यान्न का आवंटन नहीं करने और केम्पा की प्रदेश के हिस्से की 900 करोड़ की राशि रिलीज नहीं करने जैसे अनेक प्रकरणों में केन्द्र द्वारा प्रदेश के साथ लगातार पक्षपात किया जा रहा है।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा ने केन्द्र के विरूद्ध मुख्यमंत्री के संघर्ष को समर्थन दिया। उन्होंने कहा कि वे भी 13 फरवरी से मुख्यमंत्री का उपवास चलने तक किसी भी प्रकार का अन्न ग्रहण नहीं करेंगे।

गृह मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता ने भी केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश के साथ किये जा रहे भेदभाव की आलोचना की।

इस अवसर पर नगरीय प्रशासन मंत्री श्री बाबूलाल गौर, राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष श्री बाबूलाल भानपुर, नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष श्री रमेश शर्मा ''गुड्डू भैया'', महापौर श्रीमती□कृष्णा गौर, राज्य खनिज निगम के उपाध्यक्ष श्री गोविन्द मालू, राज्य क्रीड़ा परिषद के उपाध्यक्ष श्री ओम यादव सहित अनेक पार्षद और शताधिक भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे। ■